सम्पादकीय 2
उज्ज्वल भविष्य की राह देख रहे लोगों तक पहुँचा दीजिए दिव्य ज्योति के कुछ कण

शान्तिकुञ्ज समाचार 6
समाज के नवनिर्माण के लिए प्रेरित हो रही है नवयुग की तरुणाई

8
विश्व मंच : संयुक्त राष्ट्र संघ में आयोजित **वैश्विक नैतिकता मंच-2025** के मुख्य अतिथि थे शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि
• **पीस एण्ड लीडरशिप कॉन्क्लेव** में भी मिला विशेष सम्मान

शताब्दी वर्ष-2026

समाज निर्माण एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित

पाक्षिक

राजस्थान प्रज्ञा अभियान

संस्थापक, संरक्षक : युगऋषि पं श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

1 नवम्बर 2025

वर्ष : 38, अंक : 09
प्रकाशन स्थल : शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार
प्रकाशन तिथि : 27 अक्टूबर 2025
वार्षिक चंदा : ₹ 80/-
वार्षिक चंदा (विदेश) : ₹ 1000/-
प्रति अंक : ₹ 4/-

RNI-NO.38653/ 1980 Postel R.No.UA/DO/DDN/ 16 / 2024-26 Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2024-26

।। ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।।

उस प्राणस्वरूप, दुःखनाशक, सुखस्वरूप, श्रेष्ठ, तेजस्वी, पापनाशक, देवस्वरूप परमात्मा को हम अंतःकरण में धारण करें। वह परमात्मा हमें सन्मार्ग में प्रेरित करे।

युग निर्माण सत्संकल्प-13

संसार में सत्प्रवृत्तियों के पुण्य-प्रसार के लिए, अपने समय, प्रभाव, ज्ञान, पुरुषार्थ एवं धन का एक अंश नियमित रूप से लगाते रहेंगे।

संसार में जितना कुछ सत्कार्य बन पड़ रहा है, उन सबके मूल में सत्प्रवृत्तियाँ ही काम करती हैं। भले या बुरे कार्य अनायास ही नहीं उपज पड़ते, उनके मूल में सद्विचारों और कुविचारों की जड़ जमी होती है। बीज जिस प्रकार समय पाकर अंकुरित होता और फलता-फूलता है, उसी प्रकार सत्प्रवृत्तियाँ भी अगणित प्रकार के पुण्य-परमार्थों के रूप में विकसित एवं परिलक्षित होती हैं।

मनुष्य मूलतः एक प्रकार का काला कुरूप लोहा मात्र है। सद्विचारों का पारस छूकर ही वह सोना बनता है। एक नगण्य तुच्छ प्राणी को मानवता का महान् गौरव दिला सकने की क्षमता मात्र सद्विचारों में है। जिसे यह सौभाग्य नहीं मिल सका, वह बेचारा क्यों कर अपने जीवन लक्ष्य को समझ सकेगा और क्यों कर उनके लिए कुछ प्रयत्न-पुरुषार्थ कर सकेगा।

सत्प्रवृत्तियों को मनुष्य के हृदय में उतार देने से बढ़कर और कोई महत्त्वपूर्ण सेवा कार्य इस संसार में नहीं हो सकता। यह कार्य अमीर-गरीब हर व्यक्ति के लिए सहज संभव है। व्यक्तिगत एवं सामूहिक जीवन में जितनी भी कठिनाईयाँ दिखाई पडती हैं, उनका एकमात्र कारण कुबुद्धि है। यदि मनुष्य अपनी आदतों को सुधार ले, स्वभाव को सही बना ले तथा विचार व कार्यों का ठीक तारतम्य बिठा ले, तो बाहर से उत्पन्न होती दीखने वाली सभी कठिनाइयाँ बात ही बात में हल हो सकती हैं।

संसार में परमार्थ और उपकार के अनेक कार्य हैं, उनकी सार्थकता उनकी आत्मा में, उसके पीछे निहित भावनाओं में है। सद्भावना रहित सत्कर्म भी केवल ढोंग मात्र बनकर रह जाते हैं। अनेक संस्थाएँ आज परमार्थ का आडंबर करके सिंह की खाल ओढ़े फिरने वाले शृंगाल का उपहासास्पद उदाहरण प्रस्तुत कर रही हैं, जिन्हें लोग आशंका और संदेह की दृष्टि से देखने लगते हैं। प्राण रहित शरीर कितने ही सुंदर वस्त्र धारण किए हुए क्यों न हो, उसे कोई पसंद न करेगा, उससे किसी का कोई भला न होगा। इसी प्रकार सद्भावना रहित जो कुछ भी लोकहित, जनसेवा के प्रयास किये जायेंगे, वे भलाई नहीं, बुराई ही उत्पन्न करेंगे।

दानों में सर्वोत्तम दान ब्रह्मदान-ज्ञानदान को कहा जाता है। ज्ञान का अर्थ वह भावना और निष्ठा है, जो मनुष्य के नैतिक स्तर को ऊँचा उठाती है। इस अमृत जल से सींचा जाने पर मुरझाता हुआ युग-मानस पुनः हरा-भरा, पुष्प-पल्लवों से परिपूर्ण बन सकता है। इसी महान् कार्य को परमार्थ कहा जा सकता है, जिसको पूरा करने के लिए परमात्मा ने मनुष्य को विशेष क्षमता, सत्ता और महत्ता प्रदान की है।

हमें परमार्थ कार्य को जीवन का एक नितांत आवश्यक एवं लोक-परलोक के लिए श्रेयस्कर कार्य मानना चाहिए और अपने समय, प्रभाव, ज्ञान, पुरुषार्थ और धन की पाँचों विभूतियों का अधिकाधिक भाग परमार्थ के लिए लगाना चाहिए। जिसके पास जो विभूति हो, उसे वह समाज में सद्विचारों को प्रतिष्ठित करने के लिए लगाये। समय, श्रम और पुरुषार्थ तो हर व्यक्ति लगा ही सकता है। ज्ञानवान अपनी सूझबूझ एवं मार्गदर्शन से अन्यों को प्रेरित कर सकते हैं। हर व्यक्ति न्यूनतम एक घंटा समय और एक दिन की आय सत्प्रवृत्तियों के संवर्धन के लिए लगाने का क्रम बना ले, तो इतना बड़ा कार्य हो सकता है कि इतिहास में उसे स्वर्णाक्षरों में लिखा जाए।

मनोयोगयुक्त श्रम की सामर्थ्य

ईश्वर की इस विशाल सृष्टि में मनुष्य को उसकी सर्वश्रेष्ठ रचना माना जाता है, क्योंकि उसने मनुष्य को कल्पना संजोने के लिए मन, निर्णय के लिए बुद्धि तथा श्रम करने हेतु शरीर प्रदान किया है। यह सुनिश्चित तथ्य है कि मन और मस्तिष्क के समन्वय के साथ शरीर को जिस ओर कार्य करने में लगा दिया जायेगा, उस ओर चमत्कार हो जायेगा। संसार की प्रगति में मनोयोग का बड़ा गहरा हाथ रहा है। मनोयोगपूर्वक किये गये श्रम ने सदैव अच्छे परिणाम ही प्रस्तुत किये हैं।

आदि युग से लेकर वर्तमान वैज्ञानिक युग तक के परिवर्तनों पर दृष्टिपात करें तो हम पायेंगे कि मनुष्य के मस्तिष्क ने इस कुरूप और बेडौल पृथ्वी को सजाने-सँवारने का

परिश्रमी और पुरुषार्थी बनें

कार्य बड़े ही सुरुचिपूर्ण ढंग से कर दिखाया है। कहाँ आदि युग का बर्बर, जंगली मनुष्य और कहाँ वर्तमान युग का सभ्य, सुशिक्षित मानव। निश्चय ही प्रगति के पथ पर मानव मस्तिष्क, मन की कल्पनाओं को लिए दौड़ता चला गया है और सम्पूर्ण धरा को दुल्हन की भाँति सजा डाला है।

विज्ञान के आविष्कारों ने मनुष्य के श्रम के साथ मनोयोग के समन्वय की महत्ता को सिद्ध कर दिया है। यदि मनुष्य जाति का वह वर्ग, जिसने अपने श्रम तथा बुद्धि से ये सभी साधन उपलब्ध कराये हैं, श्रम से कन्नी काटने लगे, तो आज की हमारी सुविधाएँ थोड़े समय पश्चात् नष्ट हो जायेंगी। एक छोटा-सा शोषित देश जापान अपनी महत्त्वाकांक्षाओं को दमित होते देख स्थिर न रह सका। उस देश के निवासियों ने अपनी भावनाओं को ऊँचा उठाया और वे अपनी शक्ति के साथ-साथ पूर्ण मनोयोगपूर्वक अपने देश के विकास में लग गये। उन्होंने संसार के समक्ष अल्पकाल में ही प्रगति कर एक उदाहरण प्रस्तुत कर दिया। उन्होंने बता दिया कि जिसने अपना तन-मन लगा दिया, वह तुलनात्मक रूप से अधिक लाभ उठा सका, जबकि जिसने श्रम से जी चुराया वह सौभाग्य के किनारों को छू भी न सका ।

सिद्धि-सफलता का अचूक मंत्र

संसार में कुछ व्यक्ति विभिन्न क्षेत्रों में असाधारण उन्नति करते देखे जाते हैं। जन-सामान्य की धारणा उनके विषय में यह रहती है कि वे दैवी शक्ति प्राप्त व्यक्ति हैं। ऐसी दैवी सम्पदा उसी व्यक्ति विशेष को नहीं, वरन् प्रत्येक जन को पर्याप्त मात्रा में प्राप्त हो सकती है। अंतर है मात्र उसको विकसित करने का, लगन का, निष्ठा का। ऐसा सोचने वाले लोग यदि स्वयं भी श्रम के साथ मनोयोग का समन्वय कर अपने उद्देश्य की प्राप्ति में संलग्न हो जायें तो सफलता उनके पैर चूमने लगेगी। जो लोग जीवन पर्यन्त श्रम की महत्ता को न समझ सकेंगे और आलस्य में ही अपना बहुमूल्य समय गँवाते रहेंगे, उन्हें हर क्षेत्र में निराश और खाली हाथ ही रहना पड़ेगा। श्रम से कतराने वाले लोग अपने भाग्य को कोसा करते हैं। वास्तव में यह दुर्भाग्य उस व्यक्ति की अकर्मण्यता का ही है। उसी ने उसकी प्रगति को अवरुद्ध कर दिया है।

याचना नहीं, पुरुषार्थ जरूरी

अवनतिग्रस्त व्यक्तियों के दुर्भाग्य की कहानी यह है कि वे अपने अमूल्य समय और अमूल्य श्रम की महत्ता को पहचान न सके। ऐसे लोग देवताओं से कार्य सिद्धि की भीख माँगा करते हैं। ये लोग बिना परिश्रम के बड़े कार्य सिद्ध कर लेना चाहते हैं। ये लोग फल प्राप्ति के लिए जड़ को सींचना नहीं चाहते। आशीर्वाद, वरदान चाहने वाले लोग इसी वर्ग में रखे जा सकते हैं। ऐसे लोगों को जान लेना चाहिए कि मनोयोगपूर्वक किये गये श्रम से बढ़कर सिद्धि प्रदायक अन्य कोई देवता नहीं। यदि सफलता चाहते हो तो श्रम करना ही होगा।

मानव की बाहुओं में निवास करने वाला श्रम देव अत्यन्त शक्तिशाली तथा उदार है, वह कभी निरर्थक नहीं जाता। छोटे-से-छोटे साधन वाला व्यक्ति भी यदि अपनी उन्नति हेतु कोई निश्चित कार्यक्रम बनाकर अपनी सम्पूर्ण निष्ठा के साथ समय और श्रम की मात्रा बढ़ाता चले, तो प्रगति सुनिश्चित है। जहाँ आलस्य है, प्रमाद है, वहाँ जीवन की रसमयी धारा विषाक्त हो जाती है। ठीक इसके विपरीत मनोयोगपूर्वक कर्म करने वाले व्यक्ति को अपना जीवन स्वर्ग से भी अधिक सुखमय प्रतीत होने लगता है। जिस व्यक्ति के मन-प्राण में आलस रूपी जहर घुस गया, उसका तो ईश्वर ही रक्षक है। उसने अपनी बरबादी के साज-सामान स्वयं इकट्ठे कर लिए। उसके ऊपर कथित साढ़ेसाती नहीं, हमेशा-हमेशा का शनीचर चढ़ेगा और राहु का कुचक्र उसके मस्तक पर सदैव मंडराता रहेगा ।

हमें यह जानना चाहिए कि सबसे बड़ा सिद्ध मंत्र सुनिश्चित क्रम में समय, श्रम और पुरुषार्थ का उपयोग ही है। इस मंत्र को जिन्होंने जीवन में उतारा है, उन्हें सफलता कभी दूर नहीं दखाई दी और वे बड़ी सरलता से अपना उद्देश्य प्राप्त कर अग्रसर होते रहे।

सोच बदलेगी तो सफलता मिलेगी

हमें सुख-शान्ति, सन्तोष प्राप्त करना है तो खोजना होगा कि दूसरे सफल लोगों की सफलता का क्या रहस्य रहा है। क्या उनके शरीर की बनावट भिन्न थी? क्या उनकी परिस्थितियाँ भिन्न थीं या हमारे और उनके दृष्टिकोण में अन्तर है? जहाँ तक शरीर का प्रश्न है, परम-पिता परमेश्वर ने अपने सभी पुत्रों को समान अंग प्रदान किये हैं। परिस्थितियों के विषय में सोचें तो पायेंगे कि वे सफल व्यक्ति भी इसी समाज में रहते हैं, जिसमें हम रह रहे हैं। मात्र हमारा और उनका सोचने का दृष्टिकोण भिन्न है। उन्होंने श्रम से जी चुराने की बात कभी नहीं सोची और हम श्रम से बचने के रास्ते ढूंढ़ने में ही अपना समय गुजार देते हैं। वे श्रम के साथ मनोयोग का समन्वय कर लेते हैं, जबकि हममें लगन तथा निष्ठा का पूर्ण अभाव है। बस यही उनकी सफलता और सामान्यजन की असफलता का भेद है।

निष्ठा, लगन और दिलचस्पी से जो भी कार्य किया जायेगा, उसकी सफलता निश्चित है। जिन लोगों को अपने कार्यों में सफलता की आकांक्षा हो, उन्हें यही पथ अपनाना चाहिए। गौरव और सफलता अर्जित करने वाले व्यक्ति इसी रास्ते पर आगे बढ़े हैं। हमें भी यदि सफलता का गौरव अर्जित करना है तो यही मार्ग अपनाना होगा, परिश्रमी बनना होगा, जीवन के प्रत्येक क्षण का सदुपयोग करना जानना होगा। हम जितने श्रम और मनोयोग से कार्य करेंगे, उतनी ही सफलता निश्चित है।

अखण्ड ज्योति, नवम्बर 1976,
पृष्ठ 52 से संकलित-सम्पादित

उज्ज्वल भविष्य की राह देख रहे लोगों तक पहुँचा दीजिए दिव्य ज्योति के कुछ कण

यह कार्य हो जायेगा आसान, घर-घर पहुँचाकर प्रज्ञा अभियान

एक मार्मिक संस्मरण

गायत्री परिवार की युवा इकाई-डिवाइन इंडिया यूथ एसोसिएशन (दिया) दिल्ली, मुखर्जी नगर क्षेत्र में प्रेरणाप्रद कक्षाएँ (मोटिवेशनल क्लासेस) एवं सृजनात्मक गतिविधियाँ चलाते हुए सैकड़ों युवाओं का उत्साहवर्धन कर रही है, उनका मनोबल बढ़ा रही है। इस क्षेत्र में पूरे देश से आकर विभिन्न प्रशासनिक सेवाओं की प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करने वाले युवा विद्यार्थियों को इनका लाभ मिल रहा है। इन कक्षाओं में परम पूज्य गुरुदेव एवं अन्य महापुरुषों के क्रान्तिकारी विचारों और बहुमूल्य सूत्रों के आधार पर विद्यार्थियों को जीवन की यथार्थता का बोध कराते हुए जीवन जीने की कला सिखाई जाती है। इसके साथ ही उनके सामाजिक उत्तरदायित्वों का बोध कराते हुए उनके सहयोग से साहित्य स्टॉल, बाल संस्कारशालाएँ, वृक्षारोपण जैसे कार्यक्रम चलाये जाते हैं।

दिया दिल्ली के स्वयंसेवक महेन्द्र जी द्वारा गाँधी विहार में गुरुदेव का साहित्य स्टॉल लगाया जाता है, जहाँ प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे बहुत सारे छात्र आकर साहित्य पढ़ते हैं। एक दिन सरिता नाम की एक युवती, निवासी वजीराबाद कुछ परेशान और चिंताग्रस्त थी, साहित्य स्टॉल पर आई और बहुत देर तक साहित्य देखती रही। फिर वह ₹200/- का साहित्य खरीद कर ले गई।

अगले दिन वह लड़की आई और महेन्द्र जी का पैर पकड़ कर रोने लगी। उसने कहा कि मैं कल रात को जहर खाना चाहती थी। मैंने जहर खरीद भी लिया था, लेकिन कल जब मैंने यह साहित्य पढ़ना शुरू किया तो ऐसा लगा कि कोई मेरे से बात कर रहा है। मैं देर रात तक इन पुस्तकों को पढ़ती रही। मेरे मन से आत्महत्या का विचार चला गया।

साहित्य स्टॉल संचालक महेन्द्र जी ने उस पुस्तक के बारे में पूछा तो सरिता ने बताया कि **'मनः स्थिति बदलें तो परिस्थिति बदले'** पुस्तक ने मेरे मन को पूरी तरह से परिवर्तित कर दिया। उसने कहा, ''मैं किसी लड़के से प्रेम करती थी और ब्रेकअप के बाद जीवन शून्य-सा हो गया था। तब मैंने आत्महत्या करने का मन बना लिया था, लेकिन इस पुस्तक ने मेरा जीवन बचा लिया। अब मुझे जीवन की नई दिशा मिली है।'' इन दिनों वह युवती बी.एड. करने के पश्चात् प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी में लगी हुई है।

अपनी सामर्थ्य को पहचानो

आज की हारी, थकी मानवता की सबसे बड़ी आवश्यकता है आत्मबल और मनोबल। दान एक पुनीत कार्य है, लेकिन धन-साधन के दान से कहीं अधिक आवश्यकता आज लोगों में आत्मविश्वास जगाने की है, उन्हें समर्थ और स्वावलम्बी बनाने की है। सच पूछा जाये तो अभाव साधनों का नहीं है, उस सद्ज्ञान का है जो हर परिस्थिति में व्यक्ति को प्रसन्न रहना और कठिन से कठिन परिस्थिति का आत्मबल और मनोबल के साथ सामना करना सिखाता है। यदि आत्मबल हो तो व्यक्ति उत्कृष्टता की ओर, महानता की ओर अग्रसर होता जाता है। आत्मबल और मनोबल विहीन लोग ही थके, हारे, निराश, हताश और पतनोन्मुख दिखाई देते हैं। यह आत्मबल, धैर्य, साहस, मनोबल न हो तो सम्पन्नता भी धरी की धरी रह जाती है। सद्बुद्धि और सद्ज्ञान ही वह सच्ची सम्पत्ति है, जो तमाम अभावों, कष्ट-कठिनाइयों को दूर करने के लिए आवश्यक है।

अखण्ड ज्योति और प्रज्ञा अभियान

परम पूज्य गुरुदेव ने समाज के चिंतन, चरित्र और व्यवहार में क्रान्तिकारी परिवर्तन कर देने वाला अकूत साहित्य रचा है। इसके अलावा उनके द्वारा हर माह भेजी जाने वाली पत्रिका अखण्ड ज्योति ने करोड़ों लोगों का जीवन बदला है। यह ज्ञानवर्धन करने वाली पत्रिका नहीं, उनकी प्राण चेतना की संवाहक वह पाती है, जिसमें हर व्यक्ति के लिए सटीक मार्गदर्शन है। अनेक अखण्ड ज्योति के पाठकों का अनुभव है कि जब भी उनके मन में कोई दुविधा होती है, जिज्ञासाएँ उठती हैं, प्रश्न उठते हैं तो उनका समाधान उन्हें अखण्ड ज्योति पत्रिका में मिल जाता है।

इस वर्ष पाक्षिक प्रज्ञा अभियान ने भी मिशन को विस्तार देने में विशेष भूमिका निभाई है। हमारे परिजन केवल प्रज्ञा अभियान के सदस्य ही नहीं बना रहे, अपितु विभिन्न कार्यक्रमों में, संगोष्ठियों में, पर्व-त्यौहारों पर, जन्मदिवस-विवाहदिवस जैसे शुभ अवसरों पर बड़ी संख्या में इसे वितरित करने में लगे हैं। जहाँ 24 से लेकर 108 और 251 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ हो रहे हैं, वहाँ **'जितने कुण्ड, उतने गाँव और जितने गाँव उन सबमें 25-25 प्रज्ञा अभियान'** का उत्साहभरा आन्दोलन चल पड़ा है। इसके क्रांतिकारी परिणाम भी देखे जा रहे हैं, जिससे लाखों लोगों तक परम पूज्य गुरुदेव के विचार और मिशन की सक्रियता के समाचार पहुँचाने में मदद मिल रही है। मध्य प्रदेश और राजस्थान प्रान्त में इसकी उपयोगिता को समझते हुए पाक्षिक प्रज्ञा अभियान के विशेष प्रांतीय संस्करण आरंभ हो गए हैं, छत्तीसगढ़ भी इस दिशा में बड़ी तेजी से अग्रसर हैं।

प्रज्ञा अभियान समग्र है, शानदार है

पाक्षिक प्रज्ञा अभियान विचार क्रान्ति का सबसे सुगम, सस्ता और प्रभावशाली माध्यम है। यह परम पूज्य गुरुदेव के विचार, अखिल विश्व गायत्री परिवार की सक्रियता के समाचार और भावी सक्रियता के लिए मार्गदशक है। आज के मँहगाई के युग में भी लोग बड़ी आसानी से इसकी 50-100 प्रतियाँ वितरित कर सकते हैं। यह युगशक्ति गायत्री की उपासना से बदलते व्यक्तित्व और समाज को दरशाता है।

पाक्षिक अपने हर कार्यकर्त्ता की आवाज है। हर व्यक्ति के पास लोगों को मिशन को समझाने की, इसके विराट स्वरूप को प्रस्तुत करने की कला नहीं होती। प्रज्ञा अभियान के सहारे लोगों को बड़ी सरलता से मिशन का परिचय दिया जा सकता है।

कृपया समय पर पाक्षिक प्रज्ञा अभियान की सदस्यता का नवीनीकरण करा लीजिए

पाक्षिक प्रज्ञा अभियान युग चेतना विस्तार का अत्यंत क्रान्तिकारी माध्यम है। परिजन इसे घर-घर पहुँचा रहे हैं। यज्ञ, गोष्ठियों के आमंत्रण के साथ और विभिन्न कार्यक्रमों में सैकड़ों की संख्या में पाक्षिक की प्रतियाँ बाँटी जा रही हैं। पाक्षिक के समस्त सदस्यों/वितरकों से निवेदन है कि चूँकि अधिकांश लोगों की सदस्यता नवम्बर-दिसम्बर में समाप्त हो जाती है, अतः वे अपनी सदस्यता का नवीनीकरण अभी से करा लें।

नोटः सदस्यता समाप्ति की तिथि पते वाले लेबल पर लिखी होती है।

संपर्क सूत्र : 9258369725 (Whatsapp)

विशिष्ट अवसर, दुर्लभ सौभाग्य

यह जन्मशताब्दी वर्ष के शुभारंभ की उल्लासभरी, विशिष्ट सौभाग्यदायी मंगलवेला है। जन्मशताब्दी की ज्योति कलश यात्राओं ने गाँव-गाँव, घर-घर तक अखण्ड ज्योति की दिव्य चेतना, परम पूज्य गुरुदेव और परम वंदनीया माताजी को पहुँचाया है। आस्था की यह ज्योति अखण्ड रहे, प्रचण्ड होती चली जाये, इसके लिए परम पूज्य गुरुदेव के विचार और मिशन को लोगों तक निरंतर पहुँचाते रहना आवश्यक हो जाता है। लोहे और सोने को अभीष्ट आकार देने के लिए उस पर बार-बार चोट करने की आवश्यकता होती है। उसी प्रकार समय की माँग के अनुरूप समाज के हर व्यक्ति का युग निर्माण आन्दोलन में सहयोग मिलने लगे, इसके लिए उन्हें पूज्य गुरुदेव के विचारों से निरंतर जोड़े रखना आवश्यक हो जाता है। पाक्षिक प्रज्ञा अभियान के माध्यम से यह कार्य सरल हो जाता है। जैसे-जैसे लोगों में श्रद्धा और विश्वास बढ़ेगा, वैसे-वैसे उन्हें अखण्ड ज्योति का सदस्य बनाना, युगशक्ति गायत्री की उपासना-साधना के लिए सहमत करना और युग निर्माण आन्दोलन का समर्थ सहयोगी बनाना सरल होता जायेगा।

चूँकि नवम्बर, दिसंबर माह पत्रिकाओं की सदस्यता का नवीनीकरण कराने और नए सदस्य बनाने का समय होता है, अतः इस अवसर पर परम पूज्य गुरुदेव द्वारा किए गए ज्ञानयज्ञ के आह्वान पर पूरी गंभीरता के साथ चिंतन-मनन करना चाहिए। वे सदैव हर वर्ष 1 से 5 और 5 से 25 के क्रम में पत्रिकाओं की सदस्यता का विस्तार करने का आह्वान अपने बच्चों से करते रहे हैं। हमें उनकी इस अपेक्षा पर संकल्पपूर्वक खरा उतरना चाहिए।

जितने कुण्ड-उतने गाँव, हर गाँव में पहुँचें 25 प्रज्ञा अभियान

प्रज्ञा अभियान एवं मिशन की अन्य पत्रिकाओं की सदस्यता को हमारी सक्रियता का मापदण्ड माना जा सकता है। इस दृष्टि से जहाँ भी बड़े यज्ञ हो रहे हैं, वहाँ 'जितने कुण्ड, उतने गाँव और जितने गाँव उन सब में 25-25 प्रज्ञा अभियान' का लक्ष्य संकल्पपूर्वक पूरा करना चाहिए। हमारा हर प्रज्ञा मण्डल, महिला मण्डल, युवा मण्डल न्यूनतम 25-25 लोगों तक प्रज्ञा अभियान पहुँचाये ही। संगठन की दृष्टि से हर जिले में न्यूनतम 1000 लोगों तक प्रज्ञा अभियान पहुँचने ही चाहिए। शक्तिपीठों को अपने कार्यक्षेत्र के अनुसार अपने लक्ष्य निर्धारित कर लेने चाहिए। जहाँ गुरुकृपा से हमारे बड़े-बड़े आयोजन और निर्माण कार्य सरलता से सफलतापूर्वक सम्पन्न हो जाते हैं, वहाँ परम पूज्य गुरुदेव की इस आकांक्षा को पूरा करना कठिन नहीं हैं, आवश्यकता इसके सदुपयोग के लिए प्रत्येक को संकल्प एवं साहसपूर्वक आगे आने की है।

नवयुग की संरचना के लिए परम पूज्य गुरुदेव की प्राण चेतना की दिव्य धारा और उनके क्रान्तिकारी विचारों में विश्व मानवता के कल्याण का सुनिश्चित विधान निहित है। युग निर्माण सत्संकल्प का एक बड़ा ही महत्त्वपूर्ण सूत्र है-**संसार में सत्प्रवृत्तियों के पुण्य प्रसार के लिए हम अपने समय, प्रभाव, ज्ञान, पुरुषार्थ एवं धन का एक अंश नियमित रूप से लगाते रहेंगे।** इस कसौटी पर हम खरे उतरते हुए हर व्यक्ति को सन्मार्ग की ओर प्रेरित करते चलें। पाक्षिक प्रज्ञा अभियान इसका अत्यंत सरल, सुगम माध्यम है।

जन्मशताब्दी वर्ष की हलचल

राष्ट्रीय शौर्य समृद्धि गायत्री महायज्ञ

दीपावली के बाद से पूरे देश में केन्द्रीय टोलियों द्वारा संचालित कार्यक्रमों की शृंखला आरंभ हो गई है। जन्मशताब्दी वर्ष के विशिष्ट समारोहों को अभूतपूर्व सफलता दिलाने के लिए पिछले लगभग एक-डेढ़ वर्ष से 'आपके द्वार पहुँचा हरिद्वार' जैसे जनसंपर्क अभियान, नशामुक्त भारत अभियान, ज्योति कलश यात्राएँ आदि कई कार्यक्रम चलाए गए हैं। देश-विदेश में एक नई चेतना का अभ्युदय हुआ है।

इन दिनों **राष्ट्रीय शौर्य समृद्धि गायत्री महायज्ञों** की शृंखला चल रही है। इसके अंतर्गत 24, 51, 108 और 251 कुण्डीय गायत्री यज्ञ आयोजित हो रहे हैं, जिन्हें सम्पन्न कराने के लिए 30 केन्द्रीय टोलियाँ पूरे देश में सक्रिय हैं। जनवरी में बसंत पंचमी से जन्मशताब्दी समारोह की कार्यक्रम शृंखला का शुभारंभ हो जायेगा। इससे पूर्व देश में जगह-जगह युवा सम्मेलन, कन्या/किशोर कौशल एवं नारी सशक्तीकरण सम्मेलन तथा तरह-तरह के कार्यकर्त्ता प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन हो रहा है।

आगामी दिसम्बर माह तक लगभग 300 कार्यक्रम पूरे देश में आयोजित होंगे। हर जाग्रत् आत्मा को युगयज्ञ में भागीदारी की प्रेरणा, आमंत्रण और अवसर इन कार्यक्रमों के माध्यम से प्राप्त हो, यही इन कार्यक्रमों का प्रमुख लक्ष्य है। देश के करोड़ों लोगों की साधना और सृजन चेतना के प्रभाव से ऋषियुग्म के संकल्प की सिद्धि सुनिश्चित है। राष्ट्र, संस्कृति और समूची मानवता शान्ति, समृद्धि और उज्ज्वल भविष्य की ओर अग्रसर हो, मानवमात्र को सद्बुद्धि प्राप्त हो, ऐसे प्रयास इन कार्यक्रमों में किये जाने हैं।

जन्मशताब्दी समारोह

बसंत पर्व 2026 से जन्मशताब्दी समारोह शृंखला का शुभारंभ होने जा रहा है। प्रथम कार्यक्रम 21, 22 एवं 23 जनवरी 2026 को हरिद्वार में आयोजित होगा। यह आगामी विराट कार्यक्रमों के आयोजनों की सफलता के लिए विभिन्न जिम्मेदारियों का निर्वहन करने में सक्षम प्राणवान कार्यकर्त्ताओं का शपथ समारोह एवं प्रशिक्षण स्तर का कार्यक्रम होगा। इसमें पूरे देश में संगठनात्मक स्तर की विविध जिम्मेदारियाँ निभा रहे और शान्तिकुञ्ज द्वारा चयनित कार्यकर्त्ता ही भाग लेंगे।

विशेष दिशा-निर्देश

- अब पूरे देश में वातावरण जन्मशताब्दीमय हो जाये, ऐसे प्रयास हमें करने हैं।
- प्रत्येक शक्तिपीठ / प्रज्ञा संस्थानों में जन्मशताब्दी वर्ष का बैनर लग ही जाना चाहिए।
- प्रज्ञा संस्थानों के प्रत्येक कार्यालय एवं महत्त्वपूर्ण स्थानों पर युग निर्माण सत्संकल्प के बड़े आकार के चित्र लगाये जाने चाहिए। इनके सामूहिक पठन का नियमित क्रम चलाना हर परिजन, प्रज्ञा संस्थान का नैतिक कर्त्तव्य है।

‘दिया’ की आत्मीयता संवर्धन कार्यशाला

उपजोन की कार्ययोजना पर विचार मंथन हुआ

बालोतरा। राजस्थान

डिवाइन इंडिया यूथ एसोसिएशन (दिया) द्वारा युवाओं में आत्मीयता संवर्धन, संगठनात्मक समन्वय और राष्ट्र निर्माण के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए जोधपुर उप ज़ोन स्तर पर नाकोड़ा तीर्थ (बालोतरा) में आत्मीयता संवर्धन कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसमें जोधपुर, जैसलमेर, बाड़मेर, जालौर, बालोतरा और पाली जिलों से आए ‘दिया’ के कार्यकर्त्ता सपरिवार सम्मिलित हुए। दिया राजस्थान के संयोजक डॉ. विवेक विजयवर्गीय ने सभी को संबोधित करते हुए कहा कि युवाओं के भीतर अपार संभावनाएँ हैं, जिन्हें सही दिशा देकर समाज में बड़ा परिवर्तन लाया जा सकता है।

कार्यशाला में नए युवाओं ने बड़े उत्साहपूर्वक भाग लिया। नाकोड़ा तीर्थ दर्शन और दीपावली स्नेह मिलन एवं गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य के जीवन पर आधारित क्विज प्रतियोगिता का आयोजन हुआ, जिसमें सभी ने सक्रिय भागीदारी निभाई। समापन सत्र में डॉ. विवेक विजयवर्गीय, रमेश छंगाणी, नरपत शर्मा, आशु सिंह, नरेन्द्र सिंह , मनीषा छंगाणी, तुलसी विजय, ओमप्रकाश, उमेश सुथार और लूणसिंह सहित दिया एडवाइजरी कमेटी के सदस्य एवं दिया कोर कमेटी सदस्य निर्मल गहलोत उपस्थित रहे।

जोधपुर में आत्मीयता संवर्धन कार्यशाला में भाग लेने वाले दिया के युवा

प्रमुख निर्णय और आगामी योजनाएँ

1. 7 नवंबर 2025 को महाविद्यालय स्तर पर भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा आयोजित की जाएगी।
2. सभी कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में दिया क्लबों के गठन का संकल्प लिया गया।
3. शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में स्कूल और कॉलेज स्तर पर बाल संस्कारशाला एवं कन्या कौशल शिविर आयोजित किए जाएंगे।
4. प्रत्येक तहसील स्तर पर साप्ताहिक एक घंटे की सामूहिक बैठकें आयोजित की जाएँगी।
5. प्रज्ञा अभियान (राजस्थान संस्करण) पत्रिका के पाठकों की संख्या बढ़ाने तथा इसे गाँव-गाँव तक पहुँचाने पर सहमति बनी।
6. नवंबर-दिसंबर 2025 में पाली जिले में जिला स्तरीय कार्यशाला आयोजित करने का निर्णय लिया गया।
7. 11-12 जनवरी 2026 को दिया, राजस्थान का प्रांतीय स्तर का कार्यक्रम आयोजित करने का निर्णय लिया गया।

जोधपुर कोर कमेटी का गठन

कार्यशाला के दौरान दिया जोधपुर ज़ोन कोर कमेटी का गठन किया गया, जो ज़ोन स्तर के कार्यक्रमों की योजना, संचालन और समन्वय की जिम्मेदारी निभाएगी। इस कोर कमेटी में - जैसलमेर से आशु सिंह, राजेन्द्र सिंह, मुकुट शर्मा; बाड़मेर से नेमीचंद, गिरधारी, किशनाराम; बालोतरा से दौलतराम; पाली से राकेश, गौतम, हेमेन्द्र सिंह; जोधपुर से डॉ मानवेन्द्र शर्मा, पीयूष जांगिड, लोकेश खत्री को शामिल किया गया।

ज्योति कलश यात्रा की अनुयाज गोष्ठियाँ

जन्मशताब्दी वर्ष की भावी सक्रियता के लिए उपजोन स्तरीय सात गोष्ठियों के द्वारा किया गया पूरे प्रान्त का मंथन

भीनमाल। राजस्थान

गायत्री शक्तिपीठ भीनमाल में 7 अक्टूबर को अखण्ड ज्योति स्थापना के शताब्दी वर्ष की भव्य तैयारियों को लेकर पाली एवं बाड़मेर उपजोन के नौ जिलों की विशेष बैठक आयोजित हुई। राजस्थान जोन समन्वयक शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री गौरीशंकर सैनी जी ने इस अवसर पर सभी को बड़े कार्य के लिए बड़े संकल्प लेने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि संकल्प में अपार शक्ति निहित है। परम पूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी के अपने अटूट संकल्प और 24 वर्षों की कठोर तपस्या की ही शक्ति है कि वर्तमान में गायत्री परिवार रूपी विशाल वटवृक्ष विश्वभर में पुष्पित-पल्लवित हो रहा है।

राजस्थान जोन प्रभारी श्री ओमप्रकाश अग्रवाल ने जन्म शताब्दी वर्ष में देश-विदेश में चल रही तैयारियों की जानकारी देते हुए सक्रियता का उत्साह जगाया। उन्होंने 21 से 23 जनवरी 2026 तक शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार में होने जा रहे विशाल कार्यकर्त्ता सम्मेलन की जानकारी भी दी।

हर घर यज्ञ, हर मन दीप

इस गोष्ठी में ‘हर घर यज्ञ, हर मन दीप’ अभियान की अवधारणा बताई गई। यह युग परिवर्तन के लिए व्यक्ति निर्माण से राष्ट्र निर्माण तथा विचार क्रांति का विस्तार करने की योजना है। सभी कार्यकर्त्ताओं ने अपनी जिम्मेदारियों के संकल्प लिए और अंशदान भी दिया। जयप्रकाश चौहान ने सभी परिवारों से इस महाअभियान में एकजुट होकर सहयोग करने की अपील की। इस अवसर पर उपस्थित सैकड़ों कार्यकर्त्ताओं ने एक स्वर ‘हम बदलेंगे, युग बदलेगा’ के उद्घोष के साथ नवयुग निर्माण का संकल्प लिया। पाली उपज़ोन प्रभारी हरिगोपाल सोनी ने बताया कि भीनमाल शक्तिपीठ में जालोर, सिरोही, पाली, जैसलमेर और बाड़मेर जिलों के कार्यकर्त्ताओं की गोष्ठी सफलतापूर्वक सम्पन्न हुई।

भीनमाल में आयोजित गोष्ठी के मंच पर केन्द्रीय प्रतिनिधि श्री गौरीशंकर सैनी, राजस्थान के प्रभारी श्री ओम प्रकाश अग्रवाल एवं अन्य गणमान्य

पूरे प्रांत का हुआ मंथन

भीनमाल में आयोजित यह गोष्ठी जन्मशताब्दी वर्ष के कार्यक्रमों के निमित्त पूरे प्रांत में उपजोन स्तर पर आयोजित की गई गोष्ठियों में से एक थी। इन गोष्ठियों में राजस्थान जोन समन्वयक शांतिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री गौरीशंकर सैनी एवं राजस्थान जोन प्रभारी श्री ओमप्रकाश अग्रवाल जी की मुख्य उपस्थिति रही। ऐसी ही गोष्ठियाँ 2 अक्टूबर को जयपुर में, 5 को कोटा में, 6 तारीख को भीलवाड़ा में, 8 अक्टूबर को जोधपुर में तथा अंतिम गोष्ठी पुष्कर में आयोजित हुई। इन सात गोष्ठियों में सभी 50 जिलों के कार्यकर्त्ताओं ने भाग लिया।

हैप्पी एनवायरन्मेंट फॉर ऑलराउंड डेवलपमेंट

‘दिया’ की कार्यशाला

सूरतगढ़, जयपुर। राजस्थान

गायत्री परिवार की युवा इकाई- डिवाइन इंडिया यूथ एसोसिएशन (दिया) ने अक्टूबर के प्रथम पखवाड़े में लगभग एक दर्जन कार्यक्रमों का आयोजन कर समाज के सैकड़ों युवाओं को गायत्री परिवार से जुड़ने के लिए प्रेरित किया। इसी कड़ी में सूरतगढ़ में भारत विकास परिषद (थर्मल शाखा) एवं ‘दिया’ सुजानगढ़ के सहयोग से थर्मल कॉलोनी के हॉस्टल में एक दिवसीय ‘हैप्पी एनवायरन्मेंट फॉर ऑलराउंड डेवलपमेंट’ कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसमें किशोरों में बढ़ते अवसाद, तनाव एवं आत्महत्या की प्रवृत्तियों को देखते हुए किशोर-अभिभावक संवाद पर विशेष बल दिया गया। मुख्य वक्ता प्रो. विवेक विजय ने कहा, ‘डिजिटल युग में संवादहीनता अवसाद का प्रमुख कारण बन रही है, अतः अभिभावकों को बच्चों के साथ गुणवत्तापूर्ण समय बिताना चाहिए।’

किशोर अभिभावक संवाद में प्रेरणा देते प्रो. विवेक विजय

रमेश, मनीषा छंगाणी ने संवाद, आत्मीयता और लक्ष्य निर्धारण पर मार्गदर्शन दिया। तीसरे सत्र में सभी से व्यसन मुक्ति, मौन साधना, सूर्य उपासना और श्रेष्ठ साहित्य का अध्ययन जैसे कार्यों को दैनिक अभ्यास में अपनाने का आह्वान किया गया।

कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र में अतिरिक्त मुख्य अभियंता आर.के. शर्मा, पुरुषोत्तम धारीवाला, प्रो. विवेक विजय, प्रो. राजकुमार, रमेश छंगाणी, मनीषा छंगाणी, विनोद आढ़ा, मनोज शर्मा एवं मनोज गोदरा उपस्थित रहे। कार्यशाला में 32 परिवारों की सहभागिता रही। संचालन मनीषा गुप्ता ने किया।

गाँधी जयंती ‘व्यसन मुक्त भारत’ निर्माण के प्रयास

रामगढ़, जैसलमेर। राजस्थान

गाँधी जयंती के अवसर पर डिवाइन इंडिया यूथ एसोसिएशन द्वारा व्यसन मुक्त भारत अभियान के अंतर्गत ग्राम तीर्थ सप्ताह का आयोजन हुआ। विभिन्न विद्यालयों में व्यसन मुक्ति प्रदर्शनी लगाई गई, नारे प्रतियोगिता और नशामुक्ति के संकल्प के कार्यक्रम आयोजित किए गए।

कार्यक्रम संयोजक बाबू सिंह राजगुरु ने बताया कि यह आयोजन महात्मा गाँधी के आदर्श ग्राम के संकल्प पर आधारित रहा। मुख्य वक्ता ओमा राम ने कहा कि नशा केवल व्यक्ति नहीं, समाज और राष्ट्र को भी नष्ट करता है। मुख्य अतिथि चतर सिंह जाम ने गायत्री परिवार के व्यसन मुक्ति अभियान की सराहना की। विद्यार्थियों ने सामूहिक रूप से नशामुक्त भारत का संकल्प लिया तथा परिवार के लोगों को नशामुक्ति की प्रेरणा देने का संकल्प लिया।

व्यसन मुक्ति प्रदर्शनी देखती छात्राएँ

श्री गोविंद देव जी मंदिर में हुआ विशिष्ट आयोजन

अक्टूबर में जन्मे लोगों का सामूहिक जन्मदिन मनाया

जयपुर। राजस्थान

श्री गोविंद देव जी मंदिर परिसर में अक्टूबर माह में तीन रविवारों के दिन आयोजित गायत्री यज्ञ में उन सभी बच्चों का सामूहिक जन्म दिवस संस्कार मनाया गया, जिनका जन्म अक्टूबर माह में हुआ था। गायत्री शक्तिपीठ ब्रह्मपुरी के पुरोहितों ने पूजन और यज्ञ कराया। मंदिर के महंत अंजन कुमार गोस्वामी के सान्निध्य में मंदिर के सेवाधिकारी मानस गोस्वामी ने ठाकुर श्री राधा गोविंद देव जी, देव माता गायत्री और गुरुसत्ता के समक्ष दीप प्रज्वलित कर महायज्ञ का शुभारंभ किया।

यज्ञाचार्य गायत्री कचोलिया, गायत्री तोमर, दिनेश आचार्य ने वैदिक विधि-विधान से गायत्री महायज्ञ एवं जन्मदिन संस्कार सम्पन्न कराते हुए कहा कि भारतीय संस्कृति में जन्मदिन का अर्थ केवल उत्सव नहीं, बल्कि आत्मचिंतन, कृतज्ञता और नवप्रेरणा का अवसर होता है। इस अवसर पर पंचतत्त्वों – पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश की विशेषता बताई गई और उनके गुणों को जीवन में धारण करने की प्रेरणा दी गई।

यह कार्यक्रम लोगों को अपनी पारंपरिक संस्कार परम्परा को पुनर्जीवित करने तथा जन्मदिन पर केक काटने एवं मोमबत्ती बुझाने की बजाय दीप प्रज्वलित कर जन्मदिन संस्कार मनाने की प्रेरणा देने की दृष्टि से बहुत उपयोगी और सफल रहा। कार्यक्रम के अंत में जन्मदिन मनाने वाले लोगों को विशेष उपहार प्रदान कर ‘मानवीय गौरव सम्मान’ प्रदान करते हुए अभिनंदन किया गया। लोगों ने अपने जन्मदिन पर दीप जलाने, देव पूजन करने, घर के सभी बड़े-बुजुर्गों के चरण स्पर्श करने, अधिक से अधिक पेड़ लगाने और अपना जन्मदिन हर बार भारतीय संस्कृति के अनुसार मनाने का संकल्प लिया।

श्री गोविंद देव जी मंदिर में आयोजित यज्ञ में जन्म दिवस संस्कार मनाते बच्चे एवं अन्य श्रद्धालुगण

कॉलोनी में पहली बार हुआ पंच कुण्डीय गायत्री यज्ञ

भीलवाड़ा। राजस्थान : समन्वयन कॉलोनी भीलवाड़ा में गायत्री शक्तिपीठ की ओर से पंच कुण्डीय गायत्री महायज्ञ कराया गया। यज्ञ का संचालन जिला समन्वयक श्रीमती सरोजना व्यास ने किया।

सभी को सप्रेम प्रज्ञा साहित्य एवं देवपूजन चित्र भेंट किए गए। सभी ने अखण्ड ज्योति एवं प्रज्ञा अभियान पत्रिका की सदस्यता भी ग्रहण की। महिला मंडल की सदस्या श्रीमती सोनिया भारद्वाज और श्रीमती प्रतिभा पाटोदिया ने पुंसवन और अन्नप्राशन संस्कार करवाए।

प्रज्ञा युवा मंडल सदस्य महितोष ओझा ने जन्म शताब्दी समारोह के भव्य आयोजनों एवं सभी के योगदान पर चर्चा की। राजेंद्र श्रोत्रिय, मधु श्रोत्रिय ने गायत्री परिवार द्वारा देशभर में किए जा रहे कार्यों एवं अभियानों की जानकारी दी। कॉलोनी में पहली बार हवन होने से स्थानीय लोग बहुत प्रभावित हुए। सभी ने पुनः इस प्रकार के यज्ञ का आयोजन करने का निवेदन किया।

प्रज्ञा अभियान की सदस्यता/नवीनीकरण के लिए बैंक खाता विवरण : SHRI VEDMATA GAYATRI TRUST (TMD) SBI AC : 306 3160 6578 (11 Digit) IFSC : SBIN0010588
इस बैंक अकाउंट में धनराशि जमा कराकर ट्रांस्फर प्रूफ और अपना पता पिनकोड व मोबाइल नंबर सहित व्हॉट्सएप : 9258369725 पर अथवा pragyaabhiyan@awgp.org पर भेज दें।

कार्यशाला

आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी

सामूहिक पुंसवन संस्कार के आयोजन भी हुए

काशीपुरी में सामूहिक पुंसवन संस्कार करातीं बहिनें

बहिनों में प्रज्ञा अभियान पत्रिका का वितरण

मांडल, भीलवाड़ा। राजस्थान

राजकीय उ.मा. विद्यालय, मांडल में मांडल ब्लॉक की आँगनवाड़ी एवं आशा कार्यकर्त्ता बहिनों तथा स्वास्थ्यकर्मी बहिनों का आओ गढ़े संस्कारवान पीढ़ी विषय पर दो पारियों में प्रशिक्षण सम्पन्न हुआ। प्रशिक्षक डॉ. राधेश्याम श्रोत्रिय ने पुंसवन संस्कार के ज्ञान विज्ञान पर प्रकाश डाला। प्रधानाचार्य विनीत शर्मा, ब्लॉक पीएचसी प्रभारी डॉ. मनोज, बाल विकास परियोजना अधिकारी मीनाक्षी ने पूरा सहयोग किया। सभी को गर्भ संस्कार पैंफ्लेट भी वितरित किए। कार्यशाला में तीन गर्भवती महिलाओं ने भी प्रशिक्षण प्राप्त किया। गायत्री परिवार मांडल के बालकृष्ण भट्ट, भंवरजी सैन, मंजू सुखवाल ने सभी को गर्भ संस्कार के लिए प्रेरित किया। ब्लॉक मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. मनोज ने कार्यक्रम की सराहना की।

सामूहिक गर्भ संस्कार हुए

काशीपुरी तथा तिलक नगर शहरी स्वास्थ्य केन्द्र भीलवाड़ा पर 35 गर्भवती महिलाओं का गर्भ संस्कार कराया गया। आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी अभियान के प्रांतीय समन्वयक डॉ. राधेश्याम श्रोत्रिय ने गर्भवती महिलाओं को आदर्श दिनचर्या, खान-पान, श्रेष्ठ चिंतन आदि की जानकारी दी। प्रतिभा पाटोदिया तथा मृदुला श्रोत्रिय ने गर्भ संस्कार कराया। विशाल भारद्वाज ने बताया कि काशीपुरी शहरी स्वास्थ्य केन्द्र पर 20 गर्भवती महिलाओं का गर्भ संस्कार कराया गया।

आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी अभियान, भीलवाड़ा की उपज़ोन समन्वयक सरोजना व्यास ने उपासना, स्वाध्याय, गर्भ संवाद, योग, प्राणायाम आदि की महत्ता बताते हुए सभी को प्रशिक्षित किया। शकुंतला दरगड़ ने संस्कार में सहयोग किया। डॉ. राजेश छापरवाल ने सरकार द्वारा दी जाने वाली सभी सुविधाओं की जानकारी दी। महिला मंडल सदस्या आशा ओझा, अनीता व्यास, मुन्ना देवी पारीक ने संस्कार कराने में सहयोग प्रदान किया। छोटी पोसवाल, उर्मिला व्यास, रेखा सेन, नीलम टेलर, रेखा खटीक, भगवती देवी, सुमन देवी ने भी सहयोग किया।

उपजोन हनुमानगढ़ में जन्मशताब्दी के लिए भारी उत्साह

गाँव-गाँव, ढाणी-ढाणी पहुँच रही है ज्योति कलश यात्रा

हनुमानगढ़। राजस्थान

हनुमानगढ़ उपज़ोन में अगस्त से दिसंबर 2025 तक राष्ट्र जागरण ज्योति कलश रथ यात्रा के भ्रमण का कार्यक्रम है। सभी क्षेत्रों में ज्योति कलश के स्वागत के लिए भरपूर उत्साह है। ज्योति कलश के आगमन से पूर्व सभी 17 तहसीलों में गोष्ठियों का आयोजन किया जा रहा है। इसके साथ-साथ नौ कुण्डीय गायत्री यज्ञ के माध्यम से प्रचार करने का संकल्प लेकर भी इस यात्रा को तहसीलों तक सीमित न रखकर उप तहसीलों सहित 26 शहरों तक पहुँचाने की योजना बनाई गई।

कलश रथ का हर तहसील में 10 दिन का कार्यक्रम है। हर तहसील मुख्यालय सहित गाँव-गाँव, ढाणी-ढाणी में कलश धारण किए बहिनों द्वारा भव्य स्वागत समारोह आयोजित किए जा रहे हैं। स्कूलों के छात्र-छात्राओं के हाथों में सद्वाक्य की तख्तियाँ देकर अमृत कलश रथ के आगे ढोल-नगाड़ों के साथ विचार क्रांति का संदेश देने के संकल्प को पूरा किया जा रहा।

हनुमानगढ़ जिले की दस तहसीलों में यह क्रम पूरा किया जा चुका है। कार्यक्रम के वीडियो यूट्यूब पर अपलोड कर दूर-दराज बैठे लोगों को भी गायत्री परिवार के इस अभियान की जानकारी दी जा रही है।

श्रीगंगानगर। राजस्थान

अखण्ड ज्योति से प्रचंड ज्योति बनने का संदेश लेकर 14 अक्टूबर से 19 अक्टूबर तक ज्योति कलश रथ यात्रा ने श्रीगंगानगर जिले की सादुलशहर तहसील में भ्रमण किया। यात्रा के माध्यम से आध्यात्मिक जागरण, राष्ट्रीय एकता एवं सांस्कृतिक चेतना का संदेश दिया।

युवा पीढ़ी में नया उत्साह जगाती ज्योति कलश यात्रा

यात्रा के पहले दिन 14 अक्टूबर को अमरगढ़ में तथा खिचड़ान गाँव में ज्योति कलश के दर्शन हुए। दोपहर 3 बजे सादुलशहर तहसील मुख्यालय पर रथ का भव्य स्वागत किया गया। शाम 4 बजे दुर्गा मंदिर से सत्यनारायण मंदिर तक शोभायात्रा निकाली गई। शाम 5:30 बजे सत्यनारायण मंदिर में दीपयज्ञ का आयोजन हुआ। ज्योति कलश भ्रमण पथ पर आने वाले समस्त श्रद्धालुओं को दिव्य ज्योति कलश के दर्शन, गायत्री यज्ञ, शोभायात्रा, दीपयज्ञ एवं राष्ट्र चेतना से जुड़े प्रेरक प्रवचनों का लाभ मिला।

सवा लाख कन्याएँ द्वारा किया जा रहा है गायत्री मंत्र लेखन

350 बालिकाओं में बाँटी मंत्र लेखन पुस्तिकाएँ

भीलवाड़ा। राजस्थान

राजस्थान की सवा लाख कन्याओं के द्वारा गायत्री मंत्र लेखन कराया जा रहा है। शक्तिपीठों के माध्यम से मंत्र लेखन पुस्तिकाओं का वितरण किया जा रहा है। इसी कड़ी में गायत्री शक्तिपीठ महिला मंडल भीलवाड़ा द्वारा 11 अक्टूबर को सेठ मुरलीधर व्यास मानसिंहका राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय भीलवाड़ा में 350 बालिकाओं को गायत्री मंत्र लेखन पुस्तिकाएँ प्रदान की गईं।

महिला मंडल सदस्या सुशीला जाट, मृदुला श्रोत्रिय तथा सरोजना व्यास ने गायत्री मंत्र का महत्त्व बताते हुए कहा कि राजस्थान की सवा लाख कन्याओं के द्वारा गायत्री मंत्र लेखन कराया जा रहा है। संस्था की उप-प्रधानाचार्य रानी तंबोली, व्याख्याता निधि यादव, वरिष्ठ अध्यापिका सावित्री सोमानी का इस कार्य में बहुत अधिक सहयोग प्राप्त हुआ।

विद्यालय में मंत्र लेखन पुस्तिकाएँ पाकर हर्षित छात्राएँ

कन्या किशोर कौशल अभिवर्धन शिविर

इसी कड़ी में राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय गुवारड़ी भीलवाड़ा में कन्या-किशोर कौशल अभिवर्धन शिविर आयोजित किया गया। गायत्री शक्तिपीठ महिला मंडल, भीलवाड़ा की सदस्या निर्मला पुरोहित ने गायत्री मंत्र की महत्ता बताई। प्रतिभा पाटोदिया ने योग, प्राणायाम का महत्त्व बताया। जिला समन्वयक सरोजना व्यास ने कन्या कौशल अभिवर्धन शिविर की आवश्यकता तथा व्यक्तित्व परिष्कार पर प्रकाश डाला। संस्था की प्रधानाचार्या ने गायत्री परिवार के कार्यों की सराहना करते हुए इसमें अपना योगदान देने का आश्वासन दिया।

पुंसवन संस्कार के माध्यम से दिया विचार क्रांति का संदेश

जोधपुर। राजस्थान

अखिल विश्व गायत्री परिवार की शाखा गायत्री नव चेतना विस्तार केन्द्र चौपासनी हाऊसिंग बोर्ड जोधपुर के स्वयंसेवक विनोद गुप्ता एवं जिला समन्वयक जे.पी. शर्मा की टोली ने डॉ. रिया पटेल के मंगलदीप दर्शन क्षेत्र में पुंसवन संस्कार सम्पन्न कराए।

इस अवसर पर यजमानों को आओ गढ़े संस्कारवान पीढ़ी की मार्गदर्शिका, बलिवैश्व पात्र, स्टिकर, देवस्थापना चित्र इत्यादि भेंट किए गए। उन्हें प्रज्ञा अभियान, अखण्ड ज्योति एवं युग निर्माण योजना की सदस्यता भी प्रदान की गई, जिससे कि सभी को पूज्य गुरुदेव के विचारों से जोड़ने के साथ-साथ मिशन की गरिमामयी गतिविधियों से परिचित कराया जा सके। जिन भावी माताओं का पुंसवन संस्कार हुआ, उनके परिवारी जनों ने प्रसन्नता व्यक्त की तथा भविष्य में सभी संस्कार इसी प्रकार गरिमापूर्ण ढंग से करवाने का संकल्प लिया।

बाल संस्कारशाला में बताया मंत्र शक्ति का महत्त्व

राजगढ़, चूरू। राजस्थान

चूरू जिले के सादुलपुर कस्बे के ब्राह्मण पंचायत भवन में संचालित रविवारीय माँ भगवती बाल संस्कार शाला में बच्चों को गायत्री मंत्र का भावार्थ समझाया गया तथा अन्य मंत्रों का उच्चारण करना सिखाया। मंत्रों के उच्चारण के साथ-साथ बच्चों को मंत्रों का अर्थ एवं महिमा से भी अवगत कराया गया।

बाल संस्कारशाला के प्रभाव के कारण बच्चियाँ प्रतिदिन तुलसी पूजन और दीपदान कर रही हैं। बच्चों को माता-पिता एवं बड़ों के अभिवादन का महत्त्व बताया गया। गायत्री मंत्र लेखन पुस्तिकाएँ देकर उनसे मंत्र लेखन करवाया जा रहा है। चंद्रकांता ने सात्विक भोजन और कार्तिक मास के व्रत त्यौहारों की जानकारी दी।

कन्या पूजन के साथ हुई साधना अनुष्ठान की पूर्णाहुति

बाराँ। राजस्थान

नौ दिवसीय शारदीय नवरात्र साधना अनुष्ठान की पूर्णाहुति पर मेलखेड़ी रोड स्थित गायत्री शक्तिपीठ ज्योतिपुंज में नौ कुण्डीय गायत्री महायज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ में करीब 400 परिजनों ने भाग लिया। इस अवसर पर देवपूजन एवं कन्या पूजन किया गया। पूजन के पश्चात् कन्याओं एवं समस्त आगंतुकों को भोजन कराया गया।

अध्यक्ष डॉ. तेजकरण गालव ने सप्त आंदोलनों की जानकारी देते हुए सेवाकार्य का संकल्प दिलाया। सभी को प्रज्ञा साहित्य पढ़ने एवं अन्य लोगों तक पहुँचाने की प्रेरणा दी गई। यज्ञ का संचालन महिला मंडल कैलाश मेवाड़ा, गायत्री शर्मा, उषा खंडेलवाल एवं चारु सिंह जादौन ने कराया। श्यामलाल मेहता ने सभी का आभार प्रकट किया।

नारी की अस्मिता का गौरव - 'मैं हूँ निर्मात्री'

जैसलमेर। राजस्थान

दिया, जैसलमेर की ओर से परम वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा जी के जन्म शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में 'मैं हूँ निर्मात्री' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन आरती मिश्रा, रजनी गोपा, सरिता सिंह व मधु ओझा ने दीप प्रज्वलन कर किया। नाटिका 'मैं हूँ निर्मात्री' में हाड़ा रानी, पन्नाधाय, मीराबाई आदि महान नारियों के त्याग का चित्रण किया गया। मनीषा छंगाणी, पूजा कुमावत व अर्चना मित्तल ने प्रस्तुति के माध्यम से पारिवारिक पंचशील, गर्भ उत्सव संस्कार आदि की जानकारी दी।

कार्यक्रम में उपस्थित मुख्य अतिथियों-बी.के. मनीषा, आरती मिश्रा, पूर्णिमा तेजवानी ने नारी के समर्पण, सहनशीलता और भक्ति के आदर्श सूत्र प्रस्तुत किए। कार्यक्रम का संचालन अंकिता और पूजा ने किया।

प्रतापगढ़। राजस्थान

प्रतापगढ़ में भी 'मैं हूं निर्मात्री' के माध्यम से नारी जागरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर समाज में उत्कृष्ट योगदान देने वाली महिलाओं को तिलक, उपर्णा और साहित्य भेंट कर सम्मानित किया गया। डॉ. विजय बिस्सा ने गर्भ संस्कार, परिवार निर्माण में नारी की भूमिका पर विचार व्यक्त किए। डॉ. संगीता ने उपासना-साधना को दैनिक जीवन में शामिल करने का आह्वान किया।

कार्यक्रम का उद्घाटन हेमलता गौड़, रूबी यादव, राजश्री सोनी, राधा मीणा आदि विशिष्ट अतिथियों ने किया। आयोजन ने सभी नारियों में उत्साह का संचार किया। सभी ने कार्यक्रम की सराहना की। अधिक से अधिक स्थानों पर इस प्रकार के आयोजन की माँग की गई। कार्यक्रम की सफलता में सभी बहिनों का सराहनीय सहयोग प्राप्त हुआ।

नवरात्र की पूर्णाहुति पर समयदान, अंशदान के संकल्प

पिड़ावा, झालावाड़। राजस्थान

गायत्री शक्तिपीठ पिड़ावा में नवरात्र जप अनुष्ठान की पूर्णाहुति के उपलक्ष्य में पंच कुण्डीय यज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ का संचालन परिव्राजक रतीराम यदुवंशी ने किया। उन्होंने उपस्थित लोगों को लोकमंगल के लिए आगे आने के लिए प्रेरित करते हुए समयदान और अशंदान का संकल्प कराया। इस अवसर पर सर्वसम्मति से महिला मंडल का गठन किया गया। मोना सोनी (अध्यापिका) को महिला मंडल अध्यक्ष मनोनीत किया गया।

गायत्री परिवार के वरिष्ठ सदस्य मोहनलाल सोनी, अशोक सोनी, मुख्य ट्रस्टी राकेश मीणा, उपमुख्य ट्रस्टी पिंकेश भावसार के साथ कालूराम विश्वकर्मा, सचिन जिंदल, सूरज सुमन, पुरुषोत्तम मोदी, प्रमोद मोदी, दिलीप भावसार, अरुण सोनी, सत्यनारायण सोनी, सत्यनारायण कुमावत, रामेश्वर टेलर, दिलीप पाटीदार, महेश पाटीदार, हेमराज गुर्जर, मुकेश धोबी, दिनेश रावल सहित बड़ी संख्या में परिजनों और श्रद्धालुओं ने आहुतियाँ अर्पित कीं। इनके साथ मानवमात्र के कल्याण एवं उज्ज्वल भविष्य की प्रार्थना की गई।

मूर्ख लोग छोटा-सा कार्य आरम्भ करते हैं और उसी में व्याकुल हो जाते हैं, बुद्धिमान बड़े से बड़ा कार्य कर लेते हैं और निश्चिंत बने रहते हैं। - पंचतंत्र

शौर्य, समृद्धि एवं सद्बुद्धि के लिए चल रहा यज्ञ अभियान

हर पूर्णिमा ऑनलाइन यज्ञ संचालन का प्रांतीय कार्यक्रम

जयपुर। राजस्थान :
गायत्री परिवार, राजस्थान की ओर से हर पूर्णिमा के दिन आयोजित हो रहे ऑनलाइन मासिक यज्ञों की सफलता और लोकप्रियता निरंतर बढ़ रही है। विगत पूर्णिमा-7 अक्टूबर 2025 के दिन हुए यज्ञ में देश-विदेश के परिजनों ने बड़ी श्रद्धा एवं भावनात्मक एकता के साथ सहभागिता निभाई। राजस्थान के साथ पुणे, मुंबई, साहिबगंज (झारखंड), चीन, फिलिपींस और अमेरिका के परिजन भी इस आयोजन से जुड़े। यज्ञ में 108 स्थानों से लगभग 500 परिजनों ने पर्यावरण संरक्षण एवं सबके कल्याण के लिए आहुतियाँ समर्पित कीं।

कई शक्तिपीठ भी ऑनलाइन जुड़े

जयपुर स्थित ब्रह्मपुरी शक्तिपीठ, वेदना निवारण केन्द्र मानसरोवर, नीमकाथाना शक्तिपीठ, दौसा शक्तिपीठ एवं कोटा शक्तिपीठ सहित अनेक केन्द्रों पर ऑनलाइन यज्ञ संपन्न हुआ। सभी परिजनों ने इन शक्तिपीठों के ऑनलाइन दर्शन का लाभ भी प्राप्त किया। यज्ञ का संचालन जयपुर उपज़ोन समन्वयक सुशील कुमार शर्मा जी ने शान्तिकुञ्ज हरिद्वार के वरिष्ठ परिजनों के मार्गदर्शन में किया। जूम एप की क्षमता पूर्ण हो जाने के कारण अनेक परिजन ऑफलाइन यज्ञ से जुड़े और सामूहिकता की भावना के साथ उसी समय अपने घर में यज्ञ सम्पन्न किया।

देश-विदेश में 108 स्थानों पर हुआ यज्ञ

नौ कुण्डीय गायत्री महायज्ञ

बाप, फलौदी। राजस्थान
गायत्री प्रज्ञापीठ बाप में नौ कुण्डीय गायत्री महायज्ञ सम्पन्न हुआ। यज्ञ में बड़ी संख्या में क्षेत्रीय परिजन एवं ग्रामीण उपस्थित हुए। सभी ने विश्व कल्याण की कामना करते हुए विशेष आहुतियाँ समर्पित कीं। पर्यावरण संरक्षण के लिए भी आहुतियाँ दी गईं। पूर्णाहुति के अवसर पर यजमानों ने नशा एवं अन्य बुराईयों को छोड़ने का संकल्प लिया। बसन्ती चौहान, चंद्रकला सांखला, जे.पी. शर्मा, भगवान दास राठी, दयाराम पालीवाल, गोपा राम, राजकुमार, लिखमा राम सोनी, लाल चंद खत्री, विकास शर्मा सहित अन्य ने आयोजन के लिए श्रमदान-समयदान किया।

11 घरों में एक साथ यज्ञ

वल्लभनगर, उदयपुर । राजस्थान
12 अक्टूबर को मीठा नीम (वल्लभनगर) में गायत्री परिवार, उदयपुर द्वारा गृहे-गृहे गायत्री यज्ञ अभियान के अंतर्गत एक साथ अलग-अलग 11 स्थानों पर गायत्री यज्ञ कराए गए। सभी स्थानों पर विश्व शांति एवं पर्यावरण संरक्षण के लिए विशेष आहुतियाँ समर्पित की गईं। गायत्री परिवार द्वारा करवाए गए यज्ञ एवं संस्कारों की सभी ने प्रशंसा की।

उदयपुर जिला समन्वयक नरेंद्र त्रिपाठी, लहरी लाल नागदा, गंगाराम नागदा, पंकज पण्डया एवं अनेक परिजनों ने यज्ञ के समय जीवन से जुड़े संस्कारों एवं शताब्दी वर्ष के आयोजन के संबंध में विस्तार से जानकारी दी। नानालाल नरेंद्र त्रिपाठी, जसवंत सिंह, महेंद्र शर्मा, देवेंद्र जोशी, मोहन मेनारिया, घनश्याम, शारदा मेनारिया, प्रियंका मेनारिया, हीरालाल मेनारिया, इंद्र सुथार एवं देवी लाल गुर्जर ने यज्ञ पुरोहित की भूमिका निभाई।

108 कुण्डीय राष्ट्रीय शौर्य समृद्धि गायत्री महायज्ञ की तैयारियाँ जोरों पर

नीमकाथाना। राजस्थान
गायत्री शक्तिपीठ नीमकाथाना में 12 अक्टूबर को 108 कुण्डीय राष्ट्रीय शौर्य समृद्धि गायत्री महायज्ञ के लिए जिला स्तरीय गोष्ठी का आयोजन किया गया। इसकी अध्यक्षता राजस्थान ज़ोन प्रभारी एवं शक्तिपीठ के मुख्य ट्रस्टी श्री ओम प्रकाश अग्रवाल ने की। पुष्कर ज़ोन के सहायक व्यवस्थापक सुरेश शर्मा, महेंद्र मोहन पारीक, हेमंत चतुर्वेदी एवं गायत्री शक्तिपीठ ब्रह्मपुरी, जयपुर के सहायक व्यवस्थापक मणिशंकर पाटीदार ने इस गोष्ठी में उपस्थित भावनाशील परिजनों एवं कार्यकर्त्ताओं का मार्गदर्शन करते हुए यज्ञ को अभूतपूर्व सफल और सार्थक बनाने के लिए कमर कसने का उत्साह जगाया।

बैठक में समयदान, अंशदान, साधन, सामग्री, कलश यात्रा संबंधी विभिन्न कार्य योजनाओं के संबंध में विस्तृत चर्चा की गई। सभी ने आयोजन को ऐतिहासिक बनाने का संकल्प लिया। उल्लेखनीय है इस 108 कुण्डीय यज्ञ की सफलता के लिए प्रतिदिन यज्ञ, दीपयज्ञ, प्रभातफेरी, विशिष्टजनों से संपर्क सहित अनेक कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। मातृ शक्ति के द्वारा घर-घर जाकर पीले चावल और पत्रक वितरित किए जा रहे हैं।

कार्य समीक्षा एवं भावी सक्रियता के लिए हुईं गोष्ठियाँ

युवा संगोष्ठी का आयोजन

झालावाड़। राजस्थान
गायत्री परिवार झालावाड़ की युवा इकाई द्वारा जिला स्तरीय युवा गोष्ठी का आयोजन किया गया। इस गोष्ठी में डॉ. हेमराज पांचाल, डॉ. अजय भारद्वाज, आदित्य विजय और डॉ. मुकेश मीणा मुख्य अतिथि-मार्गदर्शक के रूप में उपस्थित रहे। डॉ. हेमराज ने युवाओं की जिम्मेदारी, आदित्य विजय ने शिक्षा से सुधार और डॉ. मुकेश मीणा ने सप्त आंदोलनों में युवाओं की भूमिका पर विस्तार से विचार रखे। उन्होंने प्रदेश में युवाओं की सक्रियता की सराहना करते हुए सभी में नया उत्साह जगाया। इस अवसर पर दिया झालावाड़ का पुनर्गठन किया गया। ईश्वर शर्मा (जिला संयोजक), यादवेंद्र सेन (उप संयोजक), तपिश गौतम (सह संयोजक), पवन सेन (संस्कृति प्रकल्प प्रभारी) नियुक्त किए गए।

प्रज्ञा अभियान की सदस्यता

जोधपुर। राजस्थान
नव चेतना विस्तार केन्द्र चौपासनी हाऊसिंग बोर्ड की ओर से गत पंद्रह दिनों में अनेक स्थानों पर यज्ञ के साथ विभिन्न संस्कार सम्पन्न कराए गए। सभी कार्यक्रमों में परम पूज्य गुरुदेव का संदेश देते हुए गायत्री परिवार की ओर से प्रकाशित होने वाली पुस्तकों और प्रज्ञा अभियान पत्रिका का सदस्य बनने की प्रेरणा दी गई। इसी कड़ी में जिला समन्वयक जे.पी. शर्मा और श्याम लाल सुथार की टोली ने कीर्ति नगर में गृहप्रवेश का कार्यक्रम सम्पन्न कराया, साथ ही अनेक लोगों को अखण्ड ज्योति एवं प्रज्ञा अभियान पत्रिका का सदस्य बनाया। सभी को गायत्री चालीसा एवं देवस्थापना चित्र सप्रेम भेंट किए गए।

पाँच गुना विस्तार का संकल्प कराया

गायत्री परिवार, जोधपुर ने जन्मशताब्दी वर्ष 2026 को ध्यान में रखते हुए यह प्रेरक संकल्प लिया है कि प्रत्येक परिजन अपने प्रयास से पाँच नए घरों में प्रज्ञा अभियान पत्रिका पहुंचाए और उन पाँचों को भी पाँच-पाँच नये घरों को जोड़ने की प्रेरणा दे।

पत्रिका सदस्यता अभियान के अंतर्गत पार्श्वनाथ सिटी में जगदीश प्रसाद गोयल जी के यहाँ गृहप्रवेश कार्यक्रम के अवसर पर अखण्ड ज्योति, युग निर्माण योजना एवं प्रज्ञा अभियान पत्रिका की सदस्यता की जानकारी दी गई। सभी को गायत्री चालीसा, बलिवैश्व पात्र, स्टिकर, पुस्तक इत्यादि आधे मूल्य पर उपलब्ध कराए गए। देव स्थापना चित्र सप्रेम भेंट किए गए।

टोली के सदस्यों ने यह भी आग्रह किया है कि जिले भर में होने वाले सभी गायत्री यज्ञों में मंच से विशेष रूप से यह निवेदन किया जाए कि प्रत्येक यजमान कम से कम पाँच नये घरों में वार्षिक अंशदान के माध्यम से प्रज्ञा अभियान पत्रिका का संकल्प कराएँ।

24 कुण्डीय यज्ञ की तैयारियाँ

बांसवाड़ा। राजस्थान
आगामी 30 नवंबर से 3 दिसंबर तक आयोजित होने वाले 24 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ की तैयारियों को लेकर गाँव टामटिया, परिक्षेत्र नरवाली में मोहनलाल डामोर के घर पर बैठक आयोजित हुई। गायत्री परिवार घाटोल, जिला बांसवाड़ा के कार्यकर्त्ताओं ने आयोजन के संबंध में विस्तृत जानकारी प्रदान करते हुए आयोजन समिति का गठन कर अन्य आवश्यक समितियाँ बनाकर कार्य को प्रारंभ करने का आह्वान किया। बैठक में गाँव टामटिया के प्रबुद्ध जन और श्रद्धालुगण उपस्थित हुए।

उत्तर प्रदेश के उच्च शिक्षण संस्थानों में वाङ्मय स्थापना

लखनऊ। उत्तर प्रदेश
गायत्री ज्ञान मंदिर, इंदिरा नगर, लखनऊ के द्वारा आर.जी.एस. कॉलेज ऑफ फार्मेसी, इटौंजा में गायत्री परिवार की सक्रिय कार्यकर्त्री श्रीमती सीमा निरंजन और श्री अनिल कुमार निरंजन के सौजन्य से परम पूज्य गुरुदेव के वाङ्मय के समस्त खण्डों की स्थापना की गई। संस्थान के निदेशक प्रो. डॉ. अविनाश चंद्र त्रिपाठी ने इस पहल के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया।

29 सितम्बर को मिशन के सक्रिय कार्यकर्त्ता श्री बी.पी. सविता के सौजन्य से अर्णव पैरामेडिकल इंस्टीट्यूट, सतरिख, बाराबंकी के पुस्तकालय में युगऋषि के समस्त 79 खण्डों की स्थापना हुई। अगली वाङ्मय स्थापना कल्याण सिंह अति विशिष्ट कैंसर संस्थान, सी.जी. सिटी, सुल्तानपुर रोड, लखनऊ के पुस्तकालय में हुई। यह साहित्य गायत्री परिवार की सक्रिय कार्यकर्त्री सुश्री चाँदनी शर्मा ने अपने मामा स्व. रवि उपाध्याय की स्मृति में भेंट किया।

नवयुग के प्रेरणादीप

अब बच्चे चर्च में नहीं जाते, कहते हैं, हम सनातनी हैं।

श्रीमती डी. सत्यावती

सेवा निवृत्त शिक्षिका,
श्रीविजयपुरम, अंडमान निकोबार

श्रीमती डी. सत्यावती जी के नेतृत्व में अंडमान निकोबार के मुख्यालय श्रीविजयपुरम (पूर्व का नाम पोर्ट ब्लेअर) और आसपास के क्षेत्र में वंदना सिंह आदि के भरपूर सहयोग से विगत 3-4 वर्षों से कई बाल संस्कार शालाएँ चलाई जा रही हैं। इनमें वहाँ के गरीब वनवासी परिवारों के 150 से अधिक बच्चे आते हैं। श्रीराम बाल संस्कार शाला, हनुमान बाल संस्कार शाला, विवेकानन्द बाल संस्कार शाला, वाल्मीकि बाल संस्कार शाला, विश्वामित्र बाल संस्कार शाला आदि नामों से चलने वाली इन बाल संस्कार शालाओं के माध्यम से वनवासी बच्चों की शिक्षा और व्यक्तित्व विकास की विभिन्न गतिविधियों के साथ उन्हें अपनी धर्म, संस्कृति, इतिहास, ऋषि-महापुरुषों के त्याग-बलिदान से परिचित कराया जा रहा है। इन गतिविधियों का वनवासी समाज पर बड़ा अद्भुत प्रभाव पड़ा है। बच्चों के रहन-सहन, साफ-सफाई, संस्कारों ने उनके परिवारीजनों को भी प्रभावित किया है। जब भी यज्ञ या गायत्री परिवार का कोई कार्यक्रम होता है तो वनवासी लोग बड़ी श्रद्धा और उत्साह के साथ उसमें भाग लेने आ जाते हैं।

श्रीमती डी. सत्यावती हाल ही में सेवानिवृत्त हुई शिक्षिका हैं। वे सन् 2014 में आयोजित एक पुस्तक मेले के माध्यम से परम पूज्य गुरुदेव के विचारों के संपर्क में आईं। अगले वर्ष वहाँ पहुँची शान्तिकुञ्ज की टोली के संदेश से वे इतना प्रभावित हुईं कि फिर उन्होंने अपना जीवन ही समाज के नवनिर्माण के लिए समर्पित कर दिया।

वनवासियों का धर्मांतरण अंडमान निकोबार की बड़ी समस्या है। श्रीमती डी. सत्यावती जी ने वनवासियों को इससे बचाने के लिए अथक परिश्रम किया है। उन्होंने बताया कि बच्चे तरह-तरह के प्रलोभनों में आकर चर्च में चले जाया करते थे। उन्होंने चर्च के समय में ही बाल संस्कार शाला की आकर्षक गतिविधियाँ आरंभ कर दीं और उन बच्चों को उनकी धर्म-संस्कृति का बोध कराया। अब वे बच्चे चर्च नहीं जाते। कोई बुलाता है तो वे कहते हैं हम सनातनी हैं। वे अपने जन्मदिन दीपयज्ञ से मनाते हैं, केक नहीं काटते। जब भी यज्ञ होता है तो उनका पूरा परिवार और अड़ोसी-पड़ोसी पूरी श्रद्धा और उत्साह के साथ यज्ञ में भाग लेने आते हैं। वे गायत्री उपासना करते हैं, मंत्रलेखन करते हैं और उन्हें जो सद्गुण, संस्कार बताये जाते हैं, उनको अपनाने का प्रयास करते हैं।

उन्होंने सन् 2016 में आयोजित 51 कुण्डीय यज्ञ के आयोजन में, जिसमें श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी भी पहुँचे थे, बड़ी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। अगले वर्ष से वे अनवरत शान्तिकुञ्ज आकर युगतीर्थ की ऊर्जा और प्रेरणाओं का अवगाहन करती रही हैं। वे बताती हैं कि हर दो माह में एक बार 11 कुण्डीय यज्ञ और हर 15 दिनों में 5-5 कुण्डीय यज्ञों के आयोजन उनके द्वारा किये जाते हैं।

श्रीमती डी. सत्यावती जी के साथ हनुमान और वाल्मीकि बाल संस्कार शालाओं के बच्चे

दिया, राजस्थान की सक्रियता

वृक्षगंगा अभियान का 262वाँ सप्ताह, 150 पौध लगाई

बारां। राजस्थान : 'दिया' राजस्थान की बारां शाखा ने अपने वृक्षगंगा अभियान के 262वें सप्ताह में कस्तूरबा गाँधी आवासीय विद्यालय, बारां में अर्जुन, जामुन, गुलमोहर, करंज, कचनार आदि प्रजातियों के 150 वृक्षों की पौध लगाई। इस अवसर पर बच्चों, शिक्षकों और स्वयंसेवकों का उत्साह देखते ही बन रहा था। बच्चों ने अपने हाथों से पौधे लगाकर उनकी देखभाल का संकल्प लिया। पौधों की सुरक्षा हेतु जालियाँ भी लगाई गईं। इस कार्यक्रम में कमलारानी तनेजा, कृष्णा राठौड़, रविकांत मीणा, राकेश नागर, अमित मालव, पुष्पलता उपस्थित रहे।

बाल संस्कार शाला का शुभारंभ हुआ

जैसलमेर। राजस्थान : 'दिया' जैसलमेर की ओर से राजेन्द्र प्रसाद कॉलोनी में साप्ताहिक बाल संस्कारशाला का शुभारंभ किया गया। संस्कारशाला प्रभारी अनीता शर्मा ने बताया कि यह शाला भारतीय जीवन मूल्यों एवं नैतिक शिक्षाओं के माध्यम से बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए समर्पित है। इसमें 32 बच्चों को योग, ध्यान, प्राणायाम, आदर-आज्ञा, बल संवर्धन, नीति कथाएँ, देशभक्तों के जीवन प्रसंग आदि का शिक्षण दिया जा रहा है। कार्यक्रम को सफल बनाने में रेखा कंवर, मुकुट शर्मा, संगीता राठौड़ और लूणसिंह भाटी का सहयोग मिल रहा है।

शान्तिकुञ्ज में सृजनशिल्पियों की गढ़ाई-ढलाई

राष्ट्रीय परिव्राजक गरिमा शिविर

समाज और संस्कृति के कुशल शिल्पी होते हैं परिव्राजक - डॉ. चिन्मय जी

शिविर के उद्घाटन सत्र में परिव्राजकों एवं वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं के बीच उपस्थित आद. डॉ. चिन्मय जी एवं व्यवस्थापक श्री योगेन्द्र गिरि जी

युगतीर्थ शान्तिकुञ्ज में 13 से 15 अक्टूबर 2025 तक की तिथियों में विभिन्न गायत्री शक्तिपीठों पर सेवारत परिव्राजक भाई-बहिनों के लिए राष्ट्रीय परिव्राजक गरिमा शिविर का भव्य आयोजन हुआ। इन तीन दिनों में परिव्राजकों की प्रतिभा एवं श्रद्धा के संवर्धन और जन्मशताब्दी के निमित्त उनके दायित्वों का बोध कराया गया।

शिविर का औपचारिक उद्घाटन 13 अक्टूबर को शान्तिकुञ्ज स्थित रामकृष्ण परमहंस सभागार में गरिमामय समारोह के साथ संपन्न हुआ। देव संस्कृति विश्व विद्यालय के प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। इस अवसर पर शान्तिकुञ्ज के व्यवस्थापक श्री योगेन्द्र गिरी जी एवं कई वरिष्ठ कार्यकर्त्ता उपस्थित थे।

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने परिव्राजकों को समाज और संस्कृति को सही दिशा देकर उसे संरक्षित करने वाले कुशल शिल्पी और सच्चे ब्राह्मण बताया। उन्होंने परम पूज्य गुरुदेव के आह्वान का पुनःस्मरण कराते हुए कहा कि हर व्यक्ति पर समाज का भारी ऋण होता है। इस ऋण से उऋण होने के लिए हर व्यक्ति को 50 वर्ष की उम्र के बाद अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों का बंधन ढीला करते हुए अपने ज्ञान और अनुभव को समाज के बीच जाकर अवश्य बाँटना चाहिए।

तीन दिवसीय शिविर में हुए पुनर्बोध के साथ समस्त प्रतिभागीगण अत्यंत ऊर्जावान अनुभव कर रहे थे।

दिल्ली में प्रशासनिक परीक्षाओं की तैयारी कर रहे युवाओं का दो दिवसीय शिविर

जीवन साधना से उपार्जित आत्मबल व्यक्तित्व और जीवन में सफलताओं का आधार होता है : श्रद्धेया शैल जीजी

प्रतिभागियों ने गंगातट पर की सामूहिक ध्यान साधना

शान्तिकुञ्ज में 12 एवं 13 अक्टूबर को यूपीएससी की तैयारी कर रहे युवाओं का दो दिवसीय विशेष युवा जागरण प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न हुआ। इसमें अनेक प्रतिष्ठित कंपनियों के उच्चाधिकारियों सहित वरिष्ठ सरकारी अधिकारी भी शामिल हुए। देवसंस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने उन्हें संबोधित करते हुए आत्मिक उत्कर्ष और जीवन में नैतिक संवर्धन की आवश्यकता समझाई। उन्होंने कहा कि हम सिर्फ कैरियर की ही नहीं, चरित्र निर्माण की भी सोचें। व्यक्ति की सच्ची सम्पत्ति और सफलताओं का मूल चरित्र ही है।

शान्तिकुञ्ज के वरिष्ठ वक्ताओं ने योग, ध्यान, व्यक्तित्व विकास और राष्ट्र निर्माण में युवाओं की भूमिका जैसे विषयों पर मार्गदर्शन दिया। श्रद्धेया शैल जीजी से मुलाकात के समय उनका विशेष आशीर्वाद मिला।

व्यवस्थापक श्री योगेन्द्र गिरि जी ने अपने विदाई संदेश में जन्मशताब्दी वर्ष में उनकी अग्रणी भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि आत्मबल सम्पन्न युवा अपने चरित्र, चिंतन को सक्रियता का आधार बनायें तो वे व्यक्तिगत, सामाजिक एवं राष्ट्रीय स्तर पर सकारात्मक परिवर्तन ला सकते हैं।

युवा प्रकोष्ठ के समन्वयक श्री के.पी. दुबे ने प्रतिभागियों से व्यक्तित्व और विचारों में निरंतर उत्कृष्टता लाते हुए समाज निर्माण में भागीदार बनने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि हर व्यक्ति के भीतर देवत्व का बीज विद्यमान है। जब यह बीज जाग्रत् और विकसित होता है, तो समाज में स्वर्गीय परिस्थितियाँ उत्पन्न होती हैं। सच्चरित्र, राष्ट्रभक्त, लोकसेवी युवा ही राष्ट्र का भविष्य उज्ज्वल करेंगे।

इस शिविर में आयोजन के प्रमुख सूत्रधार, दिया दिल्ली के समन्वयक श्री मनीष कुमार, श्री विनय पाण्डेय, श्री संदीप पाण्डेय, श्री दिनेश शर्मा, श्री ओंकार शर्मा, श्री गौरव वत्सल, श्री विनय चौरसिया, श्री लोकेश गर्ग, श्री संदीप रजौरिया, श्री अखिलेश पाण्डेय, श्री राजाराम सहित अनेक प्रतिष्ठित युवा शामिल रहे।

अखण्ड ज्योति (द्विमासिक) पत्रिका अब कन्नड़ भाषा में भी

वार्षिक चंदा ₹120/-

परम पूज्य गुरुदेव की विचार संजीवनी 'अखण्ड ज्योति' का हिन्दी के साथ गुजराती, मराठी, तमिल, तेलुगु, असमिया, बंगला आदि कई भाषाओं में प्रकाशन हो रहा है। जन्मशताब्दी वर्ष में युगचेतना के विस्तार को गति देने के लिए किए जा रहे विशेष प्रयासों के अंतर्गत अब शान्तिकुञ्ज से कन्नड़ भाषा में भी अखण्ड ज्योति पत्रिका का प्रकाशन आरंभ हो गया है।

सदस्यता शुल्क शांतिकुंज के निम्न में से किसी एक खाते में जमा कराकर ट्रांजेक्शन प्रूफ ईमेल **south@awgp.org** या व्हॉट्सएप **9258360651** पर भेजकर सदस्यता प्राप्त की जा सकती है।

Account Name - Sri Vedmata Gayatri Trust (TMD)
PNB A/C No. - 4694002100000572 IFSC - PUNB0469400
HDFC A/C No. - 09431450000037 IFSC - HDFC0000943
AXIS A/C No. - 914020031711542 IFSC - UTIB0000156

देसंविवि में राष्ट्रीय सेवा योजना से जुड़ा विद्यार्थी आलोक कुमार पाण्डेय राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित

राष्ट्रपति भवन। नई दिल्ली

माननीया राष्ट्रपति महोदया चि. आलोक पाण्डेय को सम्मान प्रदान करते हुए

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के श्री आलोक कुमार पाण्डेय को 7 अक्टूबर को राष्ट्रपति भवन, नई दिल्ली में आयोजित एक भव्य समारोह में माननीया राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु ने सम्मानित किया। उन्हें राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) के सक्रिय स्वयंसेवक की भूमिका में महत्त्वपूर्ण योगदान के लिए 'माय भारत-राष्ट्रीय सेवा योजना राष्ट्रपति पुरस्कार 2022-23' से सम्मानित किया गया।

श्री आलोक पाण्डेय ने राष्ट्रीय सेवा योजना के एक आदर्श स्वयंसेवक की भूमिका निभाते हुए डिजिटल साक्षरता, उज्ज्वला योजना, प्रधानमंत्री जीवन बीमा योजना, डिजिटल इंडिया जैसे जन-कल्याणकारी अभियानों के प्रति जन-जागरूकता फैलाने में अहम भूमिका निभाई है। जल संरक्षण, प्लास्टिक मुक्त भारत और स्वच्छता जैसे अभियानों को भी सक्रिय नेतृत्व प्रदान किया। श्री आलोक ने 710 पौधारोपण कर हरियाली बढ़ाने में योगदान दिया। साथ ही अनेक रक्तदान शिविरों का आयोजन कर समाज को रक्तदान के महत्त्व से अवगत कराया और स्वयं पाँच बार रक्तदान कर सेवा का आदर्श प्रस्तुत किया।

देसंविवि परिवार की शुभकामनाएँ

देसंविवि के अभिभावकद्वय श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी व श्रद्धेया शैलदीदी, प्रति कुलपति माननीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी, कुलपति श्री शरद पारधी, कुलसचिव श्री बलदाऊ देवांगन जी सहित समस्त विश्वविद्यालय परिवार ने विश्वविद्यालय का गौरव बढ़ाने वाले चि.आलोक कुमार को इस शानदार उपलब्धि के लिए शुभाशीष देते हुए उसकी सेवाभावना, अनुशासन एवं समर्पण की भावना की सराहना की। पुरस्कार ग्रहण समारोह में एनएसएस समन्वयक डॉ. उमाकांत इंदोलिया और चि. आलोक के अभिभावक भी उपस्थित रहे।

देव संस्कृति विवि. के विद्यार्थियों की 'सोशियो-टेक यात्रा'

तकनीक, नीति और संस्कृति के प्रेरक अनुभव लेकर लौटे देव संस्कृति विश्वविद्यालय के विद्यार्थी

देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार (डीएसवीवी) के छात्र-छात्राओं ने ऋषिहुड यूनिवर्सिटी, सोनीपत में आयोजित तीन दिवसीय 'सोशियो-टेक यात्रा' में भाग लिया। 3 से 5 अक्टूबर तक चली इस यात्रा का उद्देश्य युवा पीढ़ी को तकनीकी समझ, नीति-निर्माण की दृष्टि और सांस्कृतिक चेतना के समन्वय से अवगत कराना था।

इस यात्रा के साथ ही डिजाइन थिंकिंग, सिस्टम्स थिंकिंग, ग्लोबल ग्रैंड चैलेंजेज़ और ईकोरिद्म-फीनोलॉजी जैसे नवाचार आधारित सत्रों ने विद्यार्थियों की रचनात्मकता, समस्या समाधान और टीमवर्क कौशल को नई दिशा दी। सारंग संगीत तथा फिल्म स्क्रीनिंग ने प्रतिभागियों को सांस्कृतिक अनुभवों से जोड़ा। विद्यार्थियों को हरियाणा के ऐतिहासिक स्थल राखीगढ़ी का भ्रमण भी कराया गया, जहाँ उन्होंने सिंधु घाटी सभ्यता और भारत की सांस्कृतिक जड़ों को नजदीक से जाना। इस अनुभव ने यह दृष्टिकोण मजबूत किया कि आधुनिक तकनीक और प्राचीन संस्कृति एक-दूसरे के सहयोगी हैं, विरोधी नहीं।

सोशियो-टेक यात्रा देव संस्कृति विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों के लिए केवल एक शैक्षणिक कार्यक्रम नहीं, बल्कि सीख, प्रेरणा और व्यक्तित्व विकास की अनूठी पहल साबित हुई। अपने अनुशासन, सहभागिता और सकारात्मक दृष्टिकोण से विद्यार्थियों ने विश्वविद्यालय की प्रतिष्ठा में वृद्धि की और यह संदेश दिया कि ज्ञान, संस्कृति और तकनीक का संतुलन ही भविष्य के भारत की सबसे बड़ी शक्ति है।

गायत्री विद्यापीठ में हुई राज्य स्तरीय कुश्ती प्रतियोगिता

विद्यापीठ व्यवस्था मण्डल प्रमुख आदरणीया शैफाली पण्ड्या जी प्रतियोगिता की प्रथम बाउट का शुभारंभ कराते हुए

गायत्री विद्यापीठ शान्तिकुञ्ज में राज्य स्तरीय दो दिवसीय कुश्ती प्रतियोगिता आयोजित हुई। प्रतियोगिता में हरिद्वार, देहरादून, ऊधमसिंह नगर और नैनीताल जनपदों से आए 250 पहलवानों ने भाग लिया। मुकाबलों में खिलाड़ियों ने कुश्ती के रोमांचक दांव-पेच दिखाये। कुछ प्रतिभाशाली खिलाड़ियों ने अपने अनुभव और तकनीक से अत्यंत कम समय में मुकाबला जीतकर दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया।

गायत्री विद्यापीठ व्यवस्था मण्डल प्रमुख आदरणीया शैफाली पण्ड्या जी एवं प्रतियोगिता के संयोजक मुख्य शिक्षा अधिकारी श्री आशुतोष भण्डारी, खण्ड शिक्षा अधिकारी श्री बृजपाल सिंह राठौर एवं गणमान्यों ने दीप प्रज्वलन कर प्रतियोगिता का शुभारंभ किया। शैफाली पण्ड्या जी ने खिलाड़ियों को संबोधित करते हुए खेलों के महत्त्व पर प्रकाश डाला और युवाओं को खेल भावना से ओतप्रोत होकर अपने कौशल का प्रदर्शन करने के लिए प्रेरित किया।

खिलाड़ियों के उत्साहवर्धन हेतु सांसद डॉ. कल्पना सैनी, गायत्री विद्यापीठ के प्रधानाचार्य श्री सीताराम सिन्हा सहित कई गणमान्यजन उपस्थित रहे। प्रतियोगिता के अंत में सभी विजेता खिलाड़ियों को पुरस्कार दिये गए।

छिंदवाड़ा, मध्य प्रदेश से आए कार्यकर्त्ताओं का प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर

युगतीर्थ शान्तिकुञ्ज में 11 से 13 अक्टूबर 2025 तक की तिथियों में छिन्दवाड़ा, मध्य प्रदेश के आए 160 कार्यकर्त्ता भाई-बहिनों का बाल संस्कार शाला प्रशिक्षण प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न हुआ। युवा प्रकोष्ठ एवं कन्या/किशोर कौशल प्रशिक्षण प्रकोष्ठ द्वारा इसे संचालित किया गया। श्रद्धेया जीजी, आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी, शान्तिकुञ्ज के व्यवस्थापक श्री योगेन्द्र गिरि जी सहित वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं से प्रेरणा एवं प्रशिक्षण प्राप्त करने का अवसर मिला।

जिस मनुष्य का मन परमात्मा में लीन है, उसकी रक्षा स्वयं परमात्मा करते है।

यूरोपीय देशों में आस्तिकता और सद्भाव को परिष्कृत करते युगऋषि के विचार

युगावतार परम पूज्य गुरुदेव पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी की प्रखर प्राण चेतना से अनेक अंतरराष्ट्रीय मंचों को अनुप्राणित करते हुए विश्व मानवता को उज्ज्वल भविष्य की ओर प्रशस्त कर रहे देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति, युवा युग नायक आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी सितम्बर-अक्टूबर में लगभग 15 दिन के यूरोपीय देशों के प्रवास पर थे। उन्होंने इस प्रवास में 1 से 3 अक्टूबर 2025 की तिथियों में जर्मनी में फ्रैंकफर्ट की संसद में आयोजित **'पीस एंड लीडरशिप कॉन्क्लेव'** में भारत का प्रतिनिधित्व किया। वे जिनेवा, स्विट्जरलैण्ड स्थित यूएन मुख्यालय में आयोजित **वैश्विक नैतिकता मंच-2025** के उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि थे। इसके अलावा उन्होंने **इंग्लैण्ड, लिथुआनिया, पोलैण्ड** में कई महत्त्वपूर्ण कार्यक्रमों में भाग लिया और विशिष्ट गणमान्यों से मुलाकात की। प्रस्तुत है इस प्रवास की गौरवशाली उपलब्धियों का संक्षिप्त विवरण :-

यू.के. में जन्मशताब्दी समारोह की तैयारी

लंदन में आयोजित संगोष्ठी में भाग ले रहे कार्यकर्त्ता भाई-बहिन

विलेसडेन ग्रीन यूथ सेंटर में युवाओं का पथ प्रदर्शन करते आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी

लंदन । यूनाइटेड किंगडम

यूरोप प्रवास का शुभारंभ लंदन से हुआ। नवरात्र के दिनों में लंदन में वंदनीया माताजी के जन्मशताब्दी महोत्सव की तैयारियों को लेकर गायत्री परिवार, यूके के परिजनों की गोष्ठी हुई। परिजनों ने आगामी शताब्दी वर्ष को भव्य, अनुकरणीय और समाज व संस्कृति को नई दिशा देने वाला पर्व बनाने के लिए अपने विचार एवं सुझाव प्रस्तुत किए। आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने ज्योति को 'अखंड' से 'प्रचंड' बनाने की प्रेरणा देते हुए शताब्दी महोत्सव को युग निर्माण की दिशा में एक ऐतिहासिक अभियान बनाने का आह्वान किया।

ऑनलाइन भागीदारी : इस गोष्ठी के साथ अनेक परिजन ऑनलाइन भी जुड़े और गुरुकार्यों के प्रति अपनी श्रद्धा एवं समर्पण का भाव व्यक्त किया।

विल्सडेन ग्रीन यूथ सेंटर में उद्बोधन

विल्सडेन ग्रीन यूथ सेंटर में आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी का उद्बोधन हुआ। उन्होंने पूज्य गुरुदेव के विचारों के संग क्रान्तिकारी संदेश देते हुए श्रोताओं को गायत्री उपासना के अवलम्बन से जीवन को धन्य बनाने की प्रेरणा दी। यह आयोजन साधकों के जीवन में नई ऊर्जा, आत्मबल एवं आध्यात्मिक प्रगति का संचार करने वाला सिद्ध हुआ।

DOLMED.Tech 1-3 X 2025 KARPACZ

यूरोप का सबसे बड़ा चिकित्सा सम्मेलन

अखिल विश्व गायत्री परिवार को मिला अभूतपूर्व सम्मान

उद्घाटन पैनल में पहली बार किसी भारतीय ने मंच साझा किया

डॉ. चिन्मय जी प्रतिष्ठित डोलमेड टेक सम्मेलन को संबोधित करते हुए

विशिष्ट गणमान्यों को परम पूज्य गुरुदेव का साहित्य भेंट किया

1 से 3 अक्टूबर 2025 की तिथियों में पोलैण्ड के सुरम्य नगर कर्पाच में यूरोप का सबसे बड़ा चिकित्सा सम्मेलन DOLMED.Tech 2025 आयोजित हुआ। डोलमेड टेक के इस चौथे सम्मेलन में पोलैंड के स्वास्थ्य मंत्री सहित अनेक प्रतिष्ठित गणमान्य अतिथि उपस्थित रहे। पहली बार इस ऐतिहासिक सम्मेलन के उद्घाटन पैनल में किसी भारतीय प्रतिनिधि को सम्मिलित किया गया। यह गौरवशाली अवसर देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार के प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी को प्राप्त हुआ।

> आज विश्व को वैज्ञानिक अध्यात्मवाद की आवश्यकता है और यही दृष्टिकोण देव संस्कृति विश्वविद्यालय की शिक्षा और राष्ट्र निर्माण के लिए समर्पित सेवाओं का आधार है।
> - डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी

आदरणीय डॉ. पण्ड्या जी ने 'युद्धकाल में चिकित्सा एवं सैन्य खतरों के लिए स्वास्थ्य सेवा' विषय पर आयोजित उच्च स्तरीय सत्र में यूक्रेन के ओलेक्सिज व्लासोव (महानिदेशक, रीजनल मेडिकल सेंटर फॉर फैमिली हेल्थ) तथा ओलेना कोरपुसेन्को (महानिदेशक, दिनप्रोपेट्रोव्स्क रीजनल रिहैबिलिटेशन सेंटर) जैसे वैश्विक विशेषज्ञों के साथ मंच साझा किया। भारत की प्रज्ञा एवं नेतृत्व को यूरोप के सबसे बड़े चिकित्सा नवाचार मंच पर सम्मानजनक स्थान प्राप्त हुआ। वास्तव में यह एक ऐतिहासिक क्षण था। इस सम्मेलन में विश्वभर से आए हुए विशिष्ट नेता, नीति-निर्माता एवं विशेषज्ञ उपस्थित रहे।

माननीय प्रति कुलपति जी ने कहा कि वैज्ञानिक प्रगति को मानवीय मूल्यों के साथ समन्वित करना आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है। आज विश्व को वैज्ञानिक अध्यात्मवाद की आवश्यकता है और यही दृष्टिकोण देव संस्कृति विश्वविद्यालय की शिक्षा और राष्ट्र निर्माण के लिए समर्पित सेवाओं का आधार है।

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने फोरम के अध्यक्ष एवं अन्य विशिष्ट अतिथियों को भेंट स्वरूप पूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी का वाङ्मय प्रदान किया। उन्होंने विश्वस्तर पर प्रतिष्ठित विशेषज्ञों, नीति निर्माताओं के साथ स्वास्थ्य सेवा, नवाचार और टिकाऊ समाधानों पर परम पूज्य गुरुदेव के वैज्ञानिक अध्यात्मवाद के चिंतन को प्रस्तुत करने का अवसर प्रदान करने के लिए आयोजकों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त किया।

लिथुआनिया के साथ शैक्षणिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक संबंधों को सुदृढ़ करते विविध आयोजन

यज्ञ में प्रवाहित हुई दिव्य धाराएँ

लिथुआनिया की राजधानी विल्नियस में स्थानीय श्रद्धालुजनों एवं भारतीय मूल के परिजनों के बीच आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने यज्ञ सम्पन्न कराया। वेद मंत्रों और सामूहिक प्रार्थनाओं के बीच भारतीय संस्कृति की पावन परंपराओं और पूज्य गुरुदेव की प्रेरणाओं की दिव्य और प्रेरक धाराएँ प्रवाहित होती रहीं। याजकों ने आत्मिक शुद्धि, पारिवारिक समृद्धि, राष्ट्रोत्थान एवं विश्व कल्याण के लिए सक्रियता के संकल्प लिए।

शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि के साथ विल्नियस में आयोजित गायत्री यज्ञ में भाग ले रहे स्थानीय एवं भारतीय मूल के श्रद्धालु

एक महत्त्वपूर्ण मुलाकात

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी की विल्नियस कोलेगिया में डॉ. जोलांता प्रिएडिएने, अंतरराष्ट्रीय संबंधों की प्रमुख तथा वाइस रेक्टर डॉ. निजोले जिन्केविचिएने से भेंटवार्ता हुई। यह वार्ता अंतरराष्ट्रीय सहयोग की दिशा में अत्यंत महत्त्वपूर्ण उपलब्धि कही जा सकती है।

डॉ. जोलांता प्रिएडिएने एवं डॉ. निजोले जिन्केविचिएने से भेंट के बहुमूल्य क्षण

भारतीय राजदूत श्री देवेश उत्तम जी के संग

भारतीय राजदूत से दोनों देशों के बीच शैक्षणिक, सांस्कृतिक सहयोग बढ़ाने पर चर्चा हुई

माननीय प्रति कुलपति जी लिथुआनिया की राजधानी विल्नियस में भारत के राजदूत श्री देवेश उत्तम जी से मिलने गए। दोनों के बीच सर्वहितकारी देव संस्कृति, सनातन ज्ञान सम्पदा, अध्यात्म एवं अंतरराष्ट्रीय सहयोग जैसे महत्त्वपूर्ण विषयों पर विचार विनिमय हुआ। दोनों देशों के बीच शैक्षणिक आदान-प्रदान तथा नवोन्मेषी अवसरों को प्रोत्साहित करने की दिशा में सार्थक सहयोग के प्रस्तावों को अंतिम रूप देने के साथ भारतीय राजदूत के साथ हुई महत्त्वपूर्ण बैठक सम्पन्न हुई। भारतीय राजदूत को अगले वर्ष आयोजित होने वाले जन्मशताब्दी समारोह में भागीदारी का आमंत्रण भी दिया।

कर्पाच में नगर महापौर ने भव्य स्वागत किया

जन्मशताब्दी महोत्सव का आमंत्रण स्वीकारा

कर्पाच। पोलैंड

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति, युवा युगनायक आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी पोलैंड के सुरम्य नगर कर्पाच पहुँचे। वहाँ नगर के महापौर माननीय श्री रादोस्लाव येंसेक ने उनका अत्यंत आत्मीयतापूर्ण स्वागत किया। डॉ. पण्ड्या जी को नगर की ओर से एक स्मृति चिह्न प्रदान किया गया। आदरणीय डॉ. पण्ड्या जी ने इसे गायत्री परिवार के शाश्वत मूल्यों के प्रति विश्व में बढ़ते सम्मान का प्रतीक बताया।

महापौर श्री येंसेक के साथ पूज्य गुरुदेव के जीवन-दर्शन, उनके विचार तथा सिद्धांतों के साथ आगामी वर्ष में होने जा रहे जन्मशताब्दी समारोह के कार्यक्रमों पर चर्चा हुई। श्री येंसेक ने इस ऐतिहासिक आयोजन में नगर के प्रतिनिधिमंडल के साथ भाग लेने का आश्वासन दिया है।

बायें महापौर माननीय श्री रादोस्लाव येंसेक और दायें पादरी फादर बर्नार्ड को युग साहित्य भेंट करते आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी

मुख्य पादरी से मुलाकात : आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने कर्पाच के मुख्य पादरी फादर बर्नार्ड से भेंट की। दोनों के बीच सौहार्द्रपूर्ण एवं सारगर्भित चर्चा हुई।

भारतीय ध्यान केन्द्र में : कर्पाच स्थित भारतीय ध्यान केंद्र विभिन्न देशों से आने वाले साधकों को ध्यान साधना की शिक्षा प्रदान करता है। यह केंद्र आध्यात्मिक शिक्षण एवं सांस्कृतिक आदान-प्रदान का सेतु है, जो ध्यान की सार्वभौमिकता तथा विविध समुदायों पर उसके जीवन-परिवर्तनकारी प्रभाव को अभिव्यक्त करता है। आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने इस केन्द्र का निरीक्षण किया।

मायकोलास रोमेरिस विश्वविद्यालय के साथ एमओयू

देव संस्कृति विश्वविद्यालय और मायकोलास रोमेरिस विश्वविद्यालय, विल्नियस (लिथुआनिया) के साथ एक महत्त्वपूर्ण शैक्षणिक समझौता ज्ञापन (एमओयू) हुआ। इस अवसर पर एमआरयू के उप कुलपति डॉ. एग्ले मलीनाउसकिएने, अंतरराष्ट्रीय साझेदारी विभाग की अध्यक्षा डॉ. अलीना युस्किएने तथा अंतरराष्ट्रीय संबंध विभागाध्यक्ष डॉ. ऑड्रा बुरोकिएने जैसे विशिष्ट गणमान्य अतिथि उपस्थित रहे। यह अनुबंध दोनों विश्वविद्यालयों के विद्यार्थियों के लिए शोधकार्य, सांस्कृतिक संबंधों के अध्ययन जैसे कार्यों के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण सिद्ध होगा।

शुभ दृष्टि मनुष्य को सार्थक जीवन की ओर प्रेरित करती है। अशुभदर्शी होना ही निर्बलता है।

यूएन मुख्यालय में हुए वैश्विक नैतिकता मंच-2025 सम्मेलन में शान्तिकुञ्ज की भागीदारी

नैतिकता और आध्यात्मिक चेतना ही है विश्व शांति की नींव : माननीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या

- 30 से अधिक देशों के प्रतिनिधि शामिल।
- उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि थे देसंविवि के प्रति कुलपति माननीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी।
- विश्व के विद्वानों ने माना कि भारत केवल एक देश नहीं, एक विचार है, जो समस्त मानवता को एक परिवार के रूप में देखने की दृष्टि प्रदान करता है।

जिनेवा, स्विट्जरलैण्ड में आयोजित विश्व सम्मेलन में भाग ले रहे देव संस्कृति विश्वविद्यालय, शान्तिकुञ्ज के प्रति कुलपति माननीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी

सच्चा शासन संसदों में नहीं, मानव-हृदयों में जन्म लेता है। - डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी

जिनेवा स्थित यूएन मुख्यालय में वैश्विक नैतिकता मंच-2025 आयोजित हुआ। 'उत्तरदायी शासन का पुनर्निर्माण : दुविधाओं, शक्ति और उद्देश्य का समाधान' विषय पर केंद्रित इस अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में 30 से अधिक देशों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इसके उद्घाटन सत्र में देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति माननीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित थे।

माननीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने भारत की सनातन परंपरा पर आधारित शासन और नेतृत्व की उस अवधारणा को प्रस्तुत किया, जिसमें नीति और अध्यात्म, सत्ता और संवेदना एक-दूसरे के पूरक रहे हैं। उन्होंने कहा कि सच्चा शासन संसदों में नहीं, मानव-हृदयों में जन्म लेता है। जब नेतृत्व मूल्यों से संचालित होता है, तभी नीतियाँ समाज को शांति के पथ पर ले जाती हैं। शासन की हर दिशा में अध्यात्म और नैतिकता का समावेश आवश्यक है, तभी मानवता की दिशा सुधरेगी। नैतिकता और आध्यात्मिक चेतना ही शासन को जनकल्याण का माध्यम बनाती है और यही विश्व-शांति की नींव है।

माननीय डॉ. पण्ड्या जी ने युगद्रष्टा परम पूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य का दर्शन बताते हुए समस्त विश्व में 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना के विकास को वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में मानवता के लिए सबसे प्रभावी संदेश और वैश्विक अशांति का सर्वोत्तम समाधान बताया।

आध्यात्मिक पुनर्जागरण का आह्वान

डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने इस विश्व सम्मेलन में अखण्ड दीप और परम वंदनीया माताजी के जन्मशताब्दी वर्ष 2026 का उल्लेख किया। उन्होंने सभी देशों के प्रतिनिधियों से जन्मशताब्दी वर्ष में वैश्विक एकता, आत्मपरिवर्तन और आध्यात्मिक पुनर्जागरण का आह्वान किया। सभी ने इसे पूरे मनोयोग से सुना, इन विचारों की सराहना की और आभार व्यक्त किया।

विश्व के गणमान्य प्रतिभागीगण

इस दौरान ग्लोबएथिक्स के अध्यक्ष डॉ. डिट्रिच वर्नर, कार्यकारी निदेशक फादी दाऊ, उपाध्यक्ष एवं शैक्षणिक समिति की अध्यक्षा प्रो. दिव्या सिंह, डॉ. डिकी सोफजान, स्विट्जरलैंड के कोरिन मोमल-वेनियन, माइकल वीनर, स्पेन के कार्लोस अल्वारेज पेरेरा, सारा मार्किविज, अंडा फिलिप निदेशक-सदस्य संसद एवं बाह्य संबंध, जर्मनी की टेरेसा बर्गमैन, यूनाइटेड किंगडम के एलिसन हिलियर्ड, ग्लोबएथिक्स एवं यूनेस्को संस्थान बोर्ड के सदस्य आशा सिंह कंवर सहित अमेरिका, ब्राजील, दक्षिण अफ्रीका आदि देशों के प्रतिनिधि शामिल रहे।

शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने विशिष्ट अतिथियों एवं प्रतिनिधियों को देव संस्कृति विश्वविद्यालय का प्रतीक एवं युगसाहित्य भेंट किया।

अंतर संसदीय संघ के मुख्यालय में विशिष्ट महानुभावों से वार्ता

जीवन मूल्यों और मानवीय संवेदनाओं के प्रोत्साहन पर संवाद हुआ

जिनेवा। स्विट्जरलैण्ड

माननीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी की अंतर संसदीय संघ (आईपीयू) के मुख्यालय में वरिष्ठ शोधकर्ता डॉ. एंडी विलियमसन और वरिष्ठ सलाहकार एवं परामर्शदाता डॉ. सारा मार्कीविक्ज के साथ एक वार्ता हुई। चर्चा आधुनिक युग की प्रमुख चुनौतियों, जैसे वैश्विक शांति, नैतिक नेतृत्व, अंतर-सांस्कृतिक सहयोग तथा मानवता को सतत एवं समावेशी प्रगति की ओर ले जाने में आध्यात्मिकता की भूमिका पर केन्द्रित रही। बड़ा सार्थक और प्रभावशाली संवाद हुआ। जीवन मूल्यों और मानवीय संवेदनाओं पर आधारित मानवता के भविष्य के निर्माण के लिए विज्ञान, अध्यात्म और शासन के बीच समन्वय स्थापित करने की आवश्यकता अनुभव की। दोनों पक्षों ने भौगोलिक सीमाओं से परे पारस्परिक सम्मान, संवाद और साझा जिम्मेदारी पर आधारित एक वैश्विक समुदाय के निर्माण हेतु सहयोगात्मक प्रयास किये जाने पर बल दिया।

जिनेमा में अंतर संसदीय संघ का मुख्यालय भवन तथा डॉ. एंडी विलियमसन और डॉ. सारा मार्कीविक्ज से मुलाकात करते आद. डॉ. चिन्मय जी

जर्मनी की संसद में 'पीस एंड लीडरशिप कॉन्क्लेव'

डॉ. चिन्मय पण्ड्या ने किया भारत का प्रतिनिधित्व

युगऋषि के वैज्ञानिक अध्यात्मवाद को समस्त वैश्विक समस्याओं के समाधान के रूप में प्रस्तुत किया

पीस एण्ड लीडरशिप कॉन्क्लेव, फ्रैंकफर्ट में शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि का सम्मान और उद्बोधन देते डॉ. चिन्मय जी

देव संस्कृति विश्वविद्यालय, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार के प्रति कुलपति माननीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी अपने यूरोप प्रवास में फ्रैंकफर्ट स्थित जर्मनी की संसद में आयोजित 'पीस एण्ड लीडरशिप कॉन्क्लेव' में भारत का प्रतिनिधित्व करने पहुँचे थे। इस सम्मेलन में माननीय डॉ. चिन्मय जी ने भारतीय संस्कृति के मूल तत्व-यज्ञ, तप, सेवा और सद्भाव को विश्व शांति और नेतृत्व के लिए समाधान के रूप में प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय जब विश्व युद्ध, जलवायु संकट, मानसिक तनाव और सामाजिक विघटन जैसी अनेक चुनौतियों से जूझ रहा है, ऐसे में भारत का शाश्वत दृष्टिकोण 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना का विस्तार ही है विश्व की समस्त समस्याओं का व्यावहारिक समाधान। शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने कहा कि युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्यश्री ने विज्ञान और अध्यात्म के समन्वय से एक ऐसे नवयुग की नींव रखी है, जो आत्मविकास, नैतिक उत्थान और वैश्विक शांति पर आधारित है।

शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने अखण्ड दीप एवं परम वंदनीया माताजी के जन्म शताब्दी वर्ष में गायत्री परिवार द्वारा वैश्विक एकता, आत्म परिवर्तन एवं आध्यात्मिक नवजागरण को समर्पित भव्य अंतरराष्ट्रीय आयोजन किए जाने की घोषणा की।

इस सम्मेलन में श्रीमती शुचिता किशोर-कौंसुलेट जनरल ऑफ इंडिया फ्रैंकफर्ट, सुश्री उसुर्ला बुश-चेयरवुमन पार्लियामेंटरी बोर्ड एसपीडी-सिटी ऑफ फ्रैंकफर्ट, प्रो. अजीत सिकंद-जोहान गुटेनबर्ग यूनिवर्सिटी, सुश्री कृति कुमार-काउंसलर सिटी केल्स्टरबाक, श्री राहुल कुमार-सांसद, श्री जॉय एडविन थनाराजा सहित विश्व के अनेक राजनयिक, राजनीतिज्ञ, शिक्षाविद् एवं सामाजिक नेतृत्वकर्ता उपस्थित रहे। उन सभी ने माननीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी को शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया। शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने भी सभी को शान्तिकुञ्ज का स्मृति चिह्न, युग साहित्य आदि भेंट कर सम्मानित किया।

जर्मनी की संसद में गायत्री महामंत्र की गूँज, एक अद्भुत घटना

यह 16वीं शताब्दी में निर्मित संसद है। माननीय डॉ. चिन्मय जी के उद्बोधन के साथ इस ऐतिहासिक संसद भवन में पहली बार गायत्री महामंत्र की दिव्य ध्वनि गूँजी। यह ऐसा क्षण था, जिसे जर्मनी के प्रमुख समाचार पत्रों सहित मीडिया हाऊसों ने प्रमुखता से स्थान दिया। मीडिया ने इसे एक अद्भुत और रोमांचक पल बताया। गायत्री मंत्र के उच्चारण ने न केवल भारतीय संस्कृति का सम्मान बढ़ाया, बल्कि वहाँ उपस्थित सभी प्रतिभागियों के हृदयों को भी गहराई से छुआ। एक अद्भुत आध्यात्मिक ऊर्जा की अनुभूति हुई, मानो माँ गायत्री स्वयं वहाँ उपस्थित होकर सभी को आशीर्वाद दे रही हों।

फ्रैंकफर्ट में भव्य स्वागत, नगर सांसद के घर गायत्री यज्ञ

फ्रैंकफर्ट। जर्मनी : देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति माननीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी फ्रैंकफर्ट में आयोजित पीस एण्ड लीडरशिप कॉन्क्लेव में भारत का प्रतिनिधित्व करने पहुँचे थे। माननीय नगर संसद सदस्य श्री राहुल कुमार जी ने उनका भव्य स्वागत किया। उन्होंने डॉ. चिन्मय जी को अपने आवास पर आमंत्रित कर गायत्री यज्ञ भी सम्पन्न कराया, जिसमें उनका पूरा परिवार शामिल हुआ। इस अवसर पर शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने उन्हें यज्ञ का दर्शन समझाते हुए कहा कि यज्ञ एक सनातन वैदिक परंपरा है। यह न केवल व्यक्तिगत शुद्धि का माध्यम है, बल्कि शांति, सद्भाव और सर्वजन कल्याण हेतु एक सामूहिक प्रार्थना भी है।

यज्ञ में उपस्थित माननीय श्री राहुल कुमार जी का परिवार

डॉ. चिन्मय जी ने नगर संसद सदस्य को पूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी का जीवन लक्ष्य-मानवजाति में देवत्व का जागरण और धरती पर स्वर्ग का अवतरण समझाते हुए गायत्री और यज्ञ को इस लक्ष्य को चरितार्थ करने का विधान बताया।

श्री राहुल कुमार जी ने विश्व शांति दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित हो रही पीस एण्ड लीडरशिप कॉन्क्लेव में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। डॉ. चिन्मय जी ने उनके इन मानवतावादी प्रयासों के लिए आभार व्यक्त किया। इस सम्मेलन में माननीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या के मार्गदर्शन में वैश्विक सद्भाव और सतत विकास के लिए शिक्षा, प्रौद्योगिकी और आध्यात्मिकता को एकीकृत करने के दृष्टिकोण को बड़ी खूबसूरती से प्रतिबिंबित किया।

श्रीमती शैलबाला पण्ड्या शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार स्वामी श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (टीएमडी) गायत्री नगर, श्रीरामपुरम, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित तथा उत्तर भारत लाइव, एच.सी.एल. कम्पाउण्ड, सहारनपुर रोड़, निरंजनपुर, देहरादून-248001 (उत्तराखंड) में मुद्रित। **संपादक**- प्रमोद शर्मा। **पता** :- शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखंड), पिन 249411. फोन-(01334) 260602

सम्पर्क सूत्र : पंजीयन एवं पूछताछ
फोन : 01334-311004
9258369725 (व्हॉट्सएप)
ईमेल : pragyaabhiyan@awgp.org
समाचार प्रेषण : news@awgp.org

Publication date: 27.10.2025
Place: Shantikunj, Haridwar
RNI-NO.38653/ 1980
Postel R.No. UA/DO/DDN/ 16 / 2024-26
Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2024-26